04 - हमेशा रहेगा थियेटर और सिनेमा का जादू : चेतन पंडित

05 - भारतीय ग्रंथों में वेदियों की सज्जा और इंस्टालेशन

06 - संकल्प और जिजीविषा की जय-यात्रा

07 - एक ही दिन रिलीज हुई दो फिल्मों की दास्तां

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 31 अगस्त, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 03, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

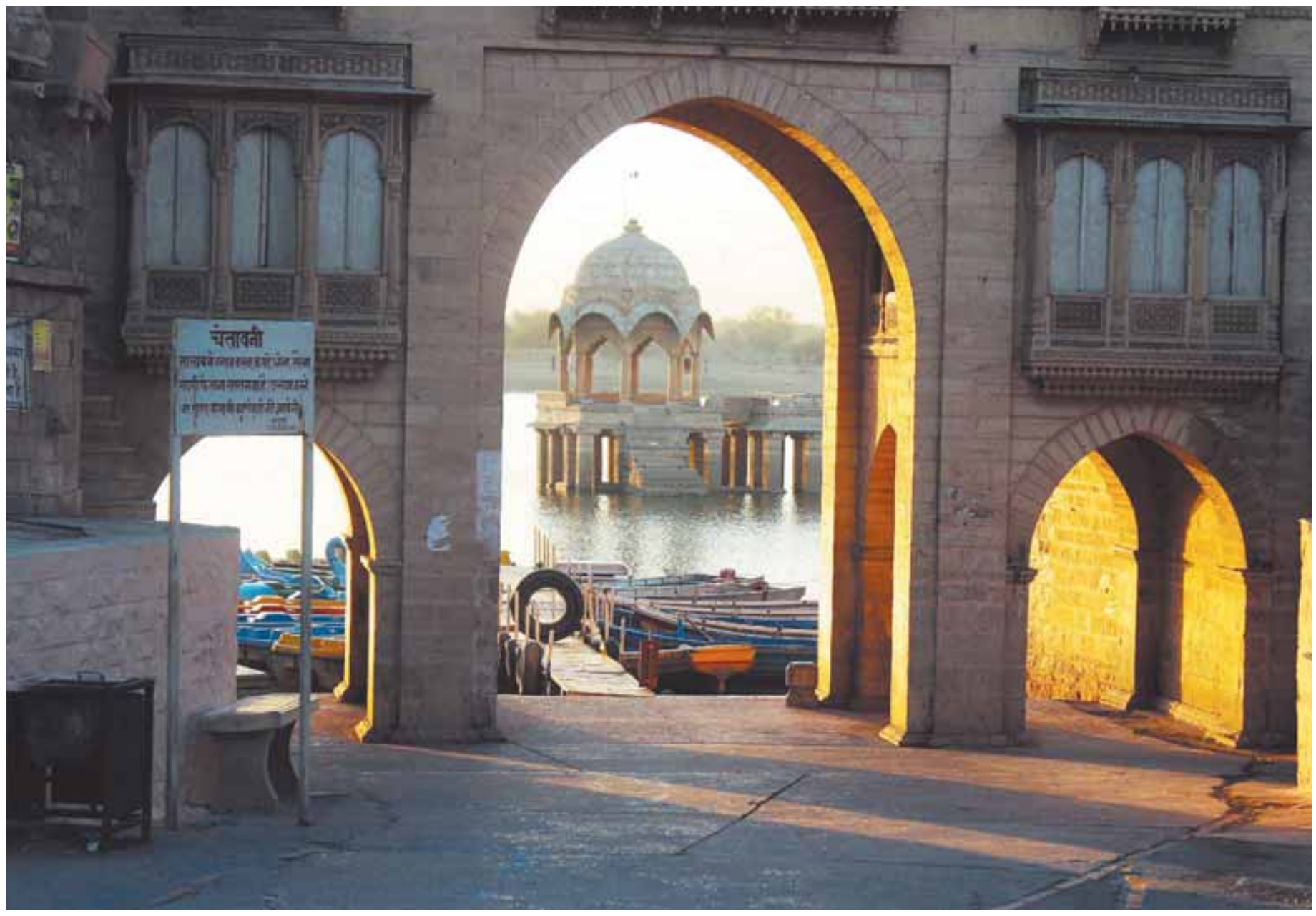

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

गड़ीसर... जैसलमेर का गड़ीसर या गदी सागर 12वीं शताब्दी में बनवाया गया तालाब है। इसके चारों ओर मंदिर बना कर अलंकृत किया गया है।

फोटोः डॉ. पीयूष भाटिया

सुप्रभात

बारिश के बाद बबूल के नीचे से
अपनी बकरियों को हाँक
वह मुझसे मिलने आई दूर नीम के तले
नीम पर बैठी चिड़ियों ने
उसका स्वागत किया चहचहाते हुए
तोते ने उसके सौन्दर्य की तारीफ़ की
कबूतरों ने पंख फड़फड़ायें
और उससे निवेदन किया-
वह उन पर विश्वास कर सकती है
अपने प्रेम-पत्र भिजवाने के लिए
गिलहरियाँ फुदकीं
और उसकी चोटी पर से उतर गईं
अब मेरी बारी थी
मैंने नीम की डाली झुकाकर प्रेम प्रकट किया
कुछ कच्ची निबोरियाँ मोतियों-सी
कुछ सफेद-झक्क फूल आ खिले
उसके बालों में
पत्तियों को उसके गाल रास आये
कुछ बारिश की बूँदें
जो ठहरी हुई थी फूल-पत्तियों पर
हम दोनों पर एक साथ गिरी
हम दोनों कुछ देर भीगते रहे
बारिश के बाद की उस बारिश में!

- विजय राही

सात साल बाद चीन पहुंचे मोदी

जबरदस्त स्वागत

● अमेरिकी टैरिफ के बीच एससीओ समिट में होंगे शामिल ● शी जिनपिंग और पुतिन के साथ द्विपक्षीय वार्ता भी करेंगे

बीजिंग (एजेंसी)। प्रधानमंत्री मोदी दो दिन की जापान यात्रा के बाद शनिवार को एससीओ समिट में शामिल होने के लिए चीन पहुंच गए हैं। वे सात साल बाद चीन पहुंचे हैं। एससीओ समिट से इतर पीएम मोदी चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और रूसी राष्ट्रपति पुतिन के साथ द्विपक्षीय वार्ता भी करेंगे। इस दौरान राष्ट्रपति पुतिन के दिसंबर में भारत दौरे के प्रोग्राम पर भी चर्चा होगी। पीएम मोदी की यह दौरा ऐसे समय पर हो रहा है, जब पूरी दुनिया अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प की टैरिफ नीतियों से जूझ रही है। ट्रम्प ने भारत पर 50 फीसदी तो चीन पर 30 फीसदी टैरिफ लगाया है। चीन में 31 अगस्त से 1 सितंबर तक एससीओ समिट की बैठक होने वाली है। इसमें 20 से ज्यादा देशों के नेता शामिल होंगे। सीएनएन के मुताबिक शी जिनपिंग इस शिखर सम्मेलन के जरिए अमेरिकी टैरिफ से राहत दिलाने वाला,

एक स्थाई और वैकल्पिक देश के तौर पर पेश करने की है और इसे वो दोनों हाथों से भुनाने की कोशिश कर रहा है। इस शिखर सम्मेलन की सबसे खास बात ये होने वाली है कि इसमें भारत और पाकिस्तान जैसे कट्टर विरोधी, ईरान और सऊदी अरब जैसे ऐतिहासिक प्रतिद्वंद्वी भी शामिल हो रहे हैं। सीएनएन ने एक्सपर्ट्स के हवाले से कहा है कि यही विविधता एससीओ की सबसे बड़ी ताकत है, क्योंकि यह बीजिंग की ताकत दिखाता है।

अमेरिकी कोर्ट ने ट्रम्प के ज्यादातर टैरिफ को बताया गैर-कानूनी

फिलहाल रोक नहीं, ट्रम्प बोले-टैरिफ हटे तो अमेरिका बर्बाद हो जाएगा

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका की एक अपील कोर्ट ने ट्रम्प के ज्यादातर टैरिफ को गैरकानूनी बताया है। कोर्ट का कहना है कि ट्रम्प ने इन टैरिफ को लागू करने के लिए जिस कानून का सहारा लिया, वह उन्हें यह अधिकार नहीं देता। कोर्ट ने कहा कि ट्रम्प के पास हर आयात पर टैरिफ लगाने की असीमित शक्ति नहीं है। हालांकि, कोर्ट ने इस फैसले को अक्टूबर तक लागू करने से रोक दिया है, ताकि ट्रम्प सुप्रीम कोर्ट में अपील कर सकें। ट्रम्प ने इस फैसले की कड़ी आलोचना करते हुए सोशल मीडिया पर लिखा कि अगर ये टैरिफ हटे, तो अमेरिका बर्बाद हो जाएगा।

स्वदेशी उत्पादों का उपयोग ही है सच्ची राष्ट्रसेवा

मुख्यमंत्री यादव ने कहा-हमारा स्वाभिमान है स्वदेशी उत्पाद

भोपाल। मुख्यमंत्री एवं जनअभियान परिषद के अध्यक्ष डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि स्वदेशी वस्तुएं केवल उत्पाद ही नहीं, बल्कि हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, धरोहर और हमारे मान-सम्मान का प्रतीक हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किया गया 'वोकल फॉर लोकल' अभियान भारतीयता की इसी भावना को आगे बढ़ाने का

माध्यम है। हमारे देशी उत्पाद न केवल विदेशी उत्पादों से अधिक मजबूत, किफायती और गुणवत्तायुक्त हैं, बल्कि इन्हें खरीदने पर हमें अधिकतम लाभ भी मिला है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेशवासियों से आत्मीय आह्वान किया कि हर भारतीय नागरिक को न केवल स्वयं स्वदेशी उत्पादों का उपयोग करना चाहिए, बल्कि अपने आसपास के लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करना चाहिए। यही देश प्रेम हमारी अर्थव्यवस्था को मजबूती देगा। स्वदेशी भावना ही सच्ची राष्ट्सेवा का सहज मार्ग है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को कुशाभाऊ ठाकरे अंतर्राष्ट्रीय सभागार में जनअभियान परिषद और स्वदेशी जागरण मंच के संयुक्त तत्वावधान में 'स्वदेशी से स्वावलंबन' विषय पर आयोजित राज्य स्तरीय संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव व अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलन एवं भारत माता के चित्र पर पुष्पांजलि कर इस एक दिवसीय संगोष्ठी का विधिवत् शुभारंभ किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जनअभियान परिषद द्वारा स्वदेशी अभियान के लिए तैयार किए गए पोस्टर एवं ब्रोशर का भी विमोचन किया। इस ब्रोशर में स्वदेशी वस्तुओं की सूची दी गई है। कार्यक्रम में जन अभियान परिषद और स्वदेशी जागरण मंच के मध्य स्वदेशी उत्पादों के प्रचार-प्रसार की जनजागृति के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए।

हम सभी अपने मानस में, अपने आचरण में स्वदेशी भाव लाएं

संगोष्ठी में बैतूल विधायक एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि स्वदेशी एक बड़ा विषय है। राज्य सरकार स्वदेशी के प्रति जागरूकता और स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ रही है। हम सभी अपने मानस में, अपने आचरण में स्वदेशी भाव लाएं, तभी हमारा देश विकसित और समृद्ध बनेगा। हम अपनी संस्कृति और धरोहर को बचाए रखें और सरकार के स्वदेशी भाव से जुड़े हर काम, हर अभियान में सहयोगी बनें। उन्होंने कहा कि हम सभी मिलकर जागृति लाएंगे, तभी तो स्वदेशी की भावना हर नागरिक तक पहुंचेगी। जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर ने कहा कि यह राज्य स्तरीय संगोष्ठी स्वदेशी जागरण मंच के सहयोग से आयोजित की गई है।

ऑपरेशन सिंदूर में पाकिस्तान पर 50 से कम हथियार दागे

● एयर मार्शल बोले-इतने में ही पाक घबरा गया, सीजफायर के लिए कहने लगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के तीन महीने बाद वायुसेना उप प्रमुख ने नया खुलासा किया है। एयर मार्शल नर्मदेश्वर तिवारी ने कहा कि पाकिस्तान को युद्धविराम की मेज पर लाने के लिए भारतीय वायुसेना ने 50 से भी कम हथियार दागे। एनडीटीवी डिफेंस समिट में बोलते हुए एयर मार्शल ने कहा कि मौजूदा ऑप?शन की लिस?ट में हमारे पास बड़ी संख्या में टारगेट थे। आखिरकार हम 9 तक पहुंचे। हमारे लिए मुख्य बात यह थी कि 50 से भी कम हथियारों के साथ हम सीजफायर हासिल करने में सफल हुए। उन्होंने कहा, %युद्ध शुरू करना बहुत आसान है, लेकिन उसे खत्म करना उतना आसान नहीं है और यह एक महत्वपूर्ण बात थी, जिसे ध्यान में रखना जरूरी था, ताकि हमारी सेनाएं सक्रिय रहें, तैनात रहें और किसी भी संभावित स्थिति के लिए तैयार रहें। दरअसल, सेना ने 22 अप्रैल को पहलगाम आतंकवादी हमले के जवाब में 7 मई को पाकिस्तान स्थित 9 आतंकवादी ठिकानों को तबाह कर दिया था।

इसके बाद पाकिस्तान के डीजीएमओ ने भारत के डीजीएमओ से सीजफायर की गुहार लगाई थी। उन्होंने बताया कि नई दिल्ली से मिले निर्देश तीन मुख्य बातों पर केंद्रित थे। पहला, दुश्मन के खिलाफ हर कार्रवाई सख्त और दंडात्मक होनी चाहिए। दूसरा, ऐसा संदेश दिया जाए जिससे भविष्य में हमले करने की हिम्मत न हो। तीसरा, सशस्त्र बलों को पूरी परिचालन स्वतंत्रता दी जाए और साथ ही इस बात की तैयारी भी रहे कि कहीं संघर्ष पारंपरिक युद्ध का रूप न ले ले। एयर मार्शल ने भारत की इंटीग्रेटेड एयर कमांड और कंट्रोल सिस्टम (द्बष्टष्टस्) की तारीफ की। उन्होंने बताया कि चार दिन चले संघर्ष के दौरान ये सिस्टम आक्रामक और रक्षात्मक दोनों ऑपरेशन की रीढ़ साबित हुआ। द्बष्टष्टस् की मदद से भारत शुरुआती हमलों को झेल सका और पाकिस्तान को करारा जवाब दिया, जिसके बाद पाकिस्तान तनाव कम करने के लिए तैयार हो गया।

एयर फोर्स चीफ एपी सिंह ने 9 अगस्त को कहा था कि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान के 5 लड़ाकू विमान गिराए गए थे। इसके अलावा एक सर्विलांस एयरक्राफ्ट को लगभग 300 किलोमीटर की दूरी से मार गिराया। यह सतह से हवा में टारगेट हिटिंग का अभी तक का रिकॉर्ड है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 35 °c

न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 31 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

बिहार के बाद अब बंगाल में एसआईआर की तैयारी

दो दिन के भीतर ईसी के पास जमा की जाएगी रिपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार के बाद अब बंगाल में भी मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर चुनाव आयोग की सक्रियता देखने को मिल रही है। राज्य में एसआईआर को लेकर आयोग ने तैयारियां तेज कर दी हैं। दरअसल, आयोग ने राज्य के मुख्य चुनाव अधिकारी (सीईओ) के कार्यालय को पत्र

लिखकर 29 अगस्त तक चुनाव पंजीकरण अधिकारियों व सहायक चुनाव पंजीकरण अधिकारियों के रिक्त पदों की वर्तमान स्थिति पर रिपोर्ट जमा करने को कहा था। वहीं, सीईओ कार्यालय सूत्रों के मुताबिक कुछ कार्य बाकी रहने के कारण निर्धारित समय पर रिपोर्ट जमा नहीं की जा सकी है। अगले एक-दो दिनों में रिपोर्ट जमा की जाएगी। इससे पहले चुनाव आयोग ने आदेश देते हुए कहा था कि जिस भी मतदाता बूथ पर 1200 से अधिक मतदाता हैं, वहां नए बूथ तैयार करने होंगे। पश्चिम बंगाल में वर्तमान में 80,000 से अधिक पोलिंग बूथ हैं। माना जा रहा है कि बंगाल में नए बूथ बनने के बाद ये आंकड़ा 94,000 पार कर जाएगा। गौरतलब है कि नोबेल पुरस्कार प्राप्त अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने एसआईआर को लेकर चिंता जताई। इसे संवेदनशील तरीके से नहीं किया गया तो गरीब परेशान हो जाएगा।

अमित शाह के खिलाफ टिप्पणी पड़ गई भारी

महुआ मोइत्रा पर एफआईआर बोलीं-मुझे यह बहुत पसंद है

कोलकाता (एजेंसी)। तृणमूल सांसद महुआ मोइत्रा के खिलाफ अमित शाह पर टिप्पणी को लेकर एफआईआर दर्ज हुई है। यह एफआईआर कृष्णानगर की कोतवाली पुलिस स्टेशन में दर्ज की गई। मोइत्रा ने इस पर व्यंग्यात्मक प्रतिक्रिया दी। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की घुसपैठ पर की गई टिप्पणी पर गुरुवार को यह बयान दिया था। इसके बाद उन पर मामला दर्ज हुआ। बीजेपी नेताओं ने मोइत्रा की टिप्पणी को घृणित और आपत्तिजनक बताया है। मोइत्रा ने सोशल मीडिया पर भी

पलटवार किया है। महुआ मोइत्रा ने पीएम मोदी के घुसपैठ वाले बयान पर कहा था कि क्या हमारी सीमाओं की रक्षा करने वाला कोई नहीं है। अगर दूसरे देशों से लोग घुसपैठ कर रहे हैं, हमारी माताओं और बहनों पर बुरी नजर डाल रहे हैं, हमारी जमीन हड़प रहे हैं, तो सबसे पहले अमित शाह का सिर टेबल पर रख देना चाहिए। उन्होंने यह भी पूछा था कि अगर गृह मंत्री और गृह मंत्रालय देश की सीमाओं की रक्षा नहीं कर सकते तो किसकी गलती है। स्थानीय निवासी संदीप मजूमदार ने मोइत्रा के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई। बीजेपी के राहुल सिन्हा ने पूछा कि क्या यह तृणमूल कांग्रेस का आधिकारिक रुख है। इस दर्ज होने पर महुआ मोइत्रा ने एक्स (ट्विटर) पर जवाब दिया। महुआ ने लिखा कि बीजेपी ट्रोल सेल का तरीका है कि एक मुद्दा उठाओ, वायरल करो।

पीएम के खिलाफ विवादित बयान, बीजेपी का आक्रोश मार्च

सहरसा में मंत्री जीवेश बोले-सोनिया और राहुल गांधी देश की माताओं से माफी मांगे

सहरसा (एजेंसी)। दरभंगा में राहुल गांधी के मंच से प्रधानमंत्री मोदी के खिलाफ विवादित बयान को लेकर विरोध जारी है। सहरसा में भाजपा कार्यकर्ताओं ने शनिवार को आक्रोश मार्च निकाला। यह मार्च तिवारी टोला से शुरू होकर हटिया गाछी रेलवे गुमटी तक गयी। बिहार सरकार के नगर विकास मंत्री जीवेश मिश्रा, सहरसा विधायक डॉ. आलोक रंजन और प्रदेश भाजपा नेत्री लाजवंती झा ने मार्च का नेतृत्व किया। कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी के विरोध में नारेबाजी की। भाजपा नेता राजीव रंजन अमर ज्योति,शशि भूषण सिंह, समेत दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद रहे। मंत्री जीवेश मिश्रा ने कहा कि, ÷कांग्रेस का असली चाल, चरित्र और चेहरा देश के सामने आ गया है।

लोकतंत्र में गाली-गलौज की नहीं, संवाद की जरूरत होती है। राहुल गांधी के मंच से प्रधानमंत्री और उनकी दिवंगत माता के प्रति अपमानजनक टिप्पणी ने पूरे देश को शर्मसार किया है। मिश्रा ने बिहार को माता सीता, भगवान बुद्ध और महावीर की धरती बताया। उन्होंने कहा कि यहां से प्रधानमंत्री और उनकी माता के लिए अपशब्द कहना पूरे देश का अपमान है। भाजपा नेताओं ने राहुल गांधी और सोनिया गांधी से देश की माताओं और युवाओं से माफी मांगने की मांग की। मंत्री ने कहा कि कांग्रेस लगातार लोकतंत्र की गरिमा को नुकसान पहुंचा रही है। यही कारण है कि आज कांग्रेस देशभर में हाशिए पर है। इस मार्च के जरिए भाजपा कार्यकर्ताओं ने संदेश दिया कि प्रधानमंत्री और उनके परिवार के सम्मान से समझौता नहीं किया जाएगा।

हम न तो झुकेंगे और न ही कभी कमजोर दिखेंगे

- यूनियन मिनिस्टर का दावा, पिछले साल से ज्यादा होगा भारतीय एक्सपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूनियन मिनिस्टर पीयूष गोयल ने दावा किया है कि अमेरिकी टैरिफ के बावजूद भारत का इस साल पिछले साल से ज्यादा एक्सपोर्ट होगा। दिल्ली में एक इवेंट में पीयूष गोयल ने यह बात कही है। पीयूष गोयल ने कहा कि हमें अपना एक्सपोर्ट बास्केट और बड़ा करना होगा।

ताकि किसी एक देश के एकतरफा फैसले का असर ना पड़े। उन्हें उम्मीद है कि लस्ज्ञ रिफॉर्म से घरेलू डिमांड को भी बूस्ट मिलेगा। उन्होंने यह भी कहा कि अभी तक किसी सेक्टर ने टैरिफ को लेकर कोई रोना-धोना नहीं किया है। पिछले वित्त वर्ष (2024-25) में भारत का टोटल एक्सपोर्ट 824.9 बिलियन डॉलर यानी 72.71 लाख करोड़ रुपए के ऑल-टाइम हाई पर पहुंच गया था। गोयल ने कहा कि सरकार एक्सपोर्ट को बढ़ावा देने के लिए जल्द ही कई उपाय लाएगी। गोयल ने आगे कहा कि एक्सपोर्ट बढ़ाने के लिए यूरोपियन यूनियन के साथ स्वज्ञ पर बातचीत जारी है। कतर, न्यूजीलैंड, पेरू और चिली के साथ भी जल्द ही डील हो जाएगी। फिलहाल स टैरिफ की वजह से खास चिंता की बात नहीं है।

अब संसद में लगेंगे पुरी रथ यात्रा के तीन पहिए

परिसर में संस्कृति से जुड़ा यह दूसरा प्रतीक होगा

दो साल पहले तमिल सेंगोल स्थापित किया गया था

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद परिसर में पुरी रथ यात्रा के तीन पहिए लगाए जाएंगे। श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन ने शनिवार को इस बात की पुष्टि की। मंदिर समिति ने बताया कि लोकसभा स्पीकर ओम बिरला हाल ही में पुरी दौरे पर गए थे। मंदिर समिति की तरफ से उनको यह प्रस्ताव दिया गया, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया है। यह तीनों पहिए भगवान जगन्नाथ, देवी सुभद्रा और बलभद्र के रथों से निकाले जाएंगे। भगवान जगन्नाथ के रथ को नंदीघोष, देवी सुभद्रा के रथ को दर्पदलन और भगवान बलभद्र का रथ तालध्वज कहलाता है। इन तीन रथों के एक-एक पहिए दिल्ली भेजे जाएंगे। उन्हें संसद में ओडिशा की संस्कृति और विरासत के स्थायी प्रतीक के रूप में स्थापित किया जाएगा। 2023 में पीएम मोदी ने लोकसभा में सेंगोल स्थापित किया था संसद में रथ यात्रा के पहिए लगने के बाद यह परिसर में स्थापित संस्कृति से जुड़ा दूसरा प्रतीक होगा। दो साल पहले लोकसभा में सेंगोल लगाया गया था। मई 2023 संसद में स्पीकर की कुर्सी के बगल में पीएम मोदी ने सेंगोल स्थापित किया था। सेंगोल जिसे राजदंड भी कहा जाता है, उसे अंग्रेजों की तरफ से 14 अगस्त 1947 की रात पं. नेहरू को सत्ता हस्तांतरण के रूप में सौंपा गया था।

यूएस टैरिफ के बावजूद भारत की बल्ले-बल्ले

- पीयूष बोले-अबकी पिछले साल से ज्यादा होगा भारतीय एक्सपोर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूनियन मिनिस्टर पीयूष गोयल ने दावा किया है कि अमेरिकी टैरिफ के बावजूद भारत का इस साल पिछले साल से ज्यादा एक्सपोर्ट होगा। दिल्ली में एक इवेंट में पीयूष गोयल ने यह बात कही है।

पीयूष गोयल ने कहा कि हमें अपना एक्सपोर्ट बास्केट और बड़ा करना होगा। ताकि किसी एक देश के एकतरफा फैसले का असर ना पड़े। उन्हें उम्मीद है कि नए रिफॉर्म से घरेलू डिमांड को भी बूस्ट मिलेगा। उन्होंने यह भी कहा कि अभी तक किसी सेक्टर ने टैरिफ को लेकर कोई रोना-धोना नहीं किया है। पिछले वित्त वर्ष (2024-25) में भारत का टोटल एक्सपोर्ट 824.9 बिलियन डॉलर यानी 72.71 लाख करोड़ रुपए के ऑल-टाइम हाई पर पहुंच गया था।

अब रामबन में फटा बादल

11 लोगों की मौत

- कश्मीर के रियासी में लैंडस्लाइड, 7 शव बरामद
- पंजाब के 250 गांवों में बाढ़, आठ मरे

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले के बदर गांव में शनिवार सुबह लैंडस्लाइड हुई। मलबे से अब तक 7 शव बरामद किए गए हैं। यहां और भी लोगों के फंसे होने की आशंका है। अन्य लोगों की तलाश जारी है। वहीं, रामबन के राजगढ़ में बादल फटने से 4 लोगों की मौत हो गई। एक व्यक्ति लापता है। उसकी तलाश जारी है। हिमाचल प्रदेश में मंडी के गोहर में शुक्रवार देर रात बादल फटा था। नांडी पंचायत में नसेंणी नाला में कई गाड़ियां बह गईं। शिमला के जतोग कैंट में लैंडस्लाइड हुई। सेना की रेसीडेंशियल बिल्डिंगों को खाली कराया गया। पंजाब के अमृतसर, पठानकोट समेत 8 जिलों में बाढ़ के हालात बने हैं। 250 से ज्यादा गांवों में 5 से 15 फीट तक पानी भरा हुआ है। बाढ़ में अब तक 8 लोगों की मौत हो गई है। 3 लोग लापता हैं। उत्तराखंड के चमोली, रुद्रप्रयाग, टिहरी और बागेश्वर में शुक्रवार को बादल फटने की घटनाएं हुईं। हादसे में 5 लोगों की मौत हो गई और 11 लापता हैं। बागेश्वर के कपकोट में कई घरों को भी नुकसान हुआ है। यूपी के 18 जिले बाढ़ की चपेट में है। राज्य में अब तक 774 मकान बारिश-बाढ़ में ढह चुके हैं। वाराणसी में सभी 84 घाटों का आपसी संपर्क टूटा है। जम्मू-कश्मीर के कटरा में बारिश के कारण वैष्णो देवी यात्रा 5 दिन से रुकी है। 26 अगस्त को यात्रा रूट पर लैंडस्लाइड में 34 लोगों की मौत हुई थी। महाराष्ट्र के लातूर और नांदेड़ में 50 सड़कें पुल डूब गए हैं।

ह्यूमन जीपीएस नाम से मशहूर आतंकी ढेर

- 25 सालों में 100+ घुसपैठ में मदद कराई थी
- गुरेज में दो दिन पहले एनकाउंटर, बड़ी सफलता

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के बांदीपोरा जिले के गुरेज सेक्टर में नियंत्रण रेखा के पास सुरक्षाबलों ने ह्यूमन के नाम से मशहूर आतंकी बागू खान को मार गिराया है। बागू खान समंदर चाचा के नाम से भी जाना जाता था। अधिकारियों को उसका पहचान पत्र भी मिला है। सूत्रों के अनुसार, बागू खान 1995 से पाक अधिकृत कश्मीर में रह रहा था। वह 25 सालों से आतंकी गतिविधियों में एक्टिव था और घुसपैठ के सबसे पुराने मददगारों में से एक था। वह 100 से ज्यादा घुसपैठ की घटनाओं में शामिल था।

पीएम मोदी से झगड़े के बाद अब भारत नहीं आएंगे ट्रंप

- नोबेल पुरस्कार को लेकर हुई थी बहस, चीन के खिलाफ क्वाड खत्म!

वॉशिंगटन (एजेंसी)। डोनाल्ड ट्रंप और नरेन्द्र मोदी के बीच टेलीफोन पर हुई बहस के बाद अब डोनाल्ड ट्रंप का इस साल भारत आने का कोई इरादा नहीं है। अमेरिकी अखबार न्यूयॉर्क टाइम्स ने 12 भारतीय और अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से इसका खुलासा किया है। अखबार ने खुलासा करते हुए कहा है कि 17 जून को भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच टेलीफोन पर बात हुई थी। इस दौरान ट्रंप ने पाकिस्तान की तरह भारत को भी उन्हें नोबेल पुरस्कार के लिए नॉमिनेट करने कहा था, जिससे भारतीय प्रधानमंत्री भड़क गये थे। अखबार ने कहा है कि टेलीफोन पर भारतीय नेता ने ट्रंप को दो टूक शब्दों में कहा था कि भारत और पाकिस्तान के बीच मई महीने हुए सीजफायर समझौते से अमेरिका और ट्रंप का कोई लेनादेना नहीं है। हालांकि टेलीफोन पर ट्रंप ने मोदी को जरूर कहा था कि वो इस साल के अंत में भारत में होने वाले क्वाड शिखर सम्मेलन के लिए दिल्ली का दौरा करेंगे, लेकिन अब इरादा नहीं है।

कोई परमानेंट दोस्त या दुश्मन नहीं, परमानेंट इंटरेस्ट होता है

- राजनाथ बोले-भारत किसी भी कीमत पर समझौता नहीं करेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अमेरिकी टैरिफ पर विवाद के बीच कहा कि कोई भी देश परमानेंट दोस्त या दुश्मन नहीं होता है। सिर्फ परमानेंट इंटरेस्ट होता है। राजनाथ ने यह बात एनडीटीवी डिफेंस समिट में शनिवार को कही। उन्होंने कहा कि दुनिया में ट्रेड वॉर जैसे हालात हैं। विकसित देश तेजी से संरक्षणवादी हो रहे हैं। भारत किसी को अपना दुश्मन नहीं मानता, लेकिन हम राष्ट्रीय हित और लोगों के हितों से समझौता नहीं करेंगे। राजनाथ के इस बयान को ट्रम्प के टैरिफ के खिलाफ भारत, रूस और चीन के करीब आने की खबरों से जोड़कर देखा जा रहा है। पीएम मोदी शनिवार को ही जापान से चीन के दौरे पर रवाना हुए हैं।

बिहार में राहुल के सामने लगे मोदी जिंदाबाद के नारे

- बीजेपी कार्यकर्ताओं ने दिखाए काले झंडे, फ्लाइंग किस देते हुए निकले कांग्रेस नेता

आरा (एजेंसी)। बिहार में राहुल गांधी की वोटर अधिकार यात्रा का शनिवार को 14वां दिन था। भोजपुर में यात्रा के दौरान बीजेपी कार्यकर्ताओं ने राहुल गांधी को काले झंडे दिखाए। नरेंद्र मोदी जिंदाबाद के नारे लगाए। राहुल गांधी विरोध कर रहे लोगों को फ्लाइंग किस देते हुए आगे निकल गए। शनिवार को आरा के वीर कुंवर सिंह स्टेडियम में जनसभा हुई। जहां तेजस्वी यादव ने कहा, बच्चे जैसे कागज की नाव और प्लेन बनाकर उड़ाते हैं, नीतिश कुमार के वादे वैसे ही होते हैं। आप पढ़ाई, दवाई, कमाई, सिंचाई वाली सरकार बनाइए। ओरिजिनल सीएम चाहिए या डुप्लीकेट। फैसला आपको करना है। वहीं सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा, बिहार के लोगों को पता होगा, पहले भी बीजेपी का रथ यहां रोका गया है। इस बार भी यहां की जनता इनका रथ रोकेगी। ये पहले वोट का अधिकार छीनेंगे, फिर राशन का अधिकार छीनेंगे। फिर नौकरी का अधिकार छीनेंगे। ये आपको सड़क पर लाना चाहते हैं। अन्याय की लड़ाई अभी भी जारी है। वीर कुंवर सिंह स्टेडियम में जनसभा के दौरान महागठबंधन ने शक्ति प्रदर्शन भी किया। मंच पर राहुल-तेजस्वी, अखिलेश यादव, दीपांकर भट्टाचार्य, मुकेश सहनी एक साथ नजर आए। यहां से राहुल गांधी और तेजस्वी पटना के लिए रवाना हो गए। कल यात्रा में ब्रेक होगा। 1 सितंबर को पटना में वोटर अधिकार यात्रा समाप्त होगी।

- **अखिलेश बोले- इस बार बीजेपी का पलायन होगा-** अखिलेश यादव बोले, बिहार का चुनाव महत्वपूर्ण है। पूरे देश की नजर बिहार पर है। लोगों का उत्साह देखकर लग रहा है कि इस बार बीजेपी को भगा देगी। अभी चुनाव में हमने बीजेपी को अवध में हराया था। इस बार मगध में आपकी जिम्मेवारी है बीजेपी को हटाना है। अबकी बार बीजेपी बिहार से बाहर जाने वाली है। बीजेपी इस्तेमाल करने वाली पार्टी है। ये लोगों को इस्तेमाल करती है। फिर बर्बाद करने का काम करती है। चुनाव आयोग से उम्मीद थी कि निष्पक्ष काम करेगा। लेकिन आयोग जिस तरह से आयोग काम कर रहा है। बीजेपी से मिलकर काम कर रहा है। ये चुनाव आयोग नहीं है। बीजेपी ने इसे जुगाड़ आयोग बना दिया। है। बीजेपी के इशारे पर एसआईआर का सिरफिरा फैसला लिया है। इस बार तेजस्वी होंगे, तो बेरोजगारों का पलायन नहीं होगा। बीजेपी का पलायन होने जा रहा है।

एमपी के रीवा जिले में चोरी हो गए 3 तालाब !

तलाशने वाले को ईनाम की घोषणा, थाने में शिकायत

● गांवों में हुई मुनादी, अपने तालाबों की सुरक्षा खुद करें

भोपाल। एमपी के रीवा जिले की अमलिया और मनीराम पंचायत में ग्रामीण ढोलक लेकर मुनादी कर रहे हैं कि उनकी लोग अपने-अपने खेतों व आसपास बने अमृत सरोबर और तालाबों की हिफाजत खुद करें। अन्यथा वे चोरी हो सकते हैं! इन पंचायतों में अमृत सरोबर सहित तीन तालाब चोरी होने की शिकायत बाकायदा थाने में कराई गई है। मामले में कलेक्टर ने जांच के आदेश भी दिए हैं। ग्रामीणों ने तालाब खोजने वालों को इनाम देने की भी घोषणा की है। रीवा की पंचायतों में कुछ युवा और ग्रामीण समूह बनाकर चोरी गए अमृत सरोबर, खेत तालाब और बांध वाले तालाबों के आसपास चौकसी करते नजर आ रहे हैं। इस आशय के वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रहे हैं। जिले की पूर्वा मनीराम पंचायत और उससे सटी अमिलिया पंचायत में ग्रामीणों का कहना है कि हम कल तक लबालब भरे अमृत सरोबर में मछली पकड़ते थे, लेकिन सुबह आए तो तालाब गायब था। इसकी चोरी हो गई..! इन लोगों ने लिखित में इलाके के थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई है कि उनके गांवों में सरकारी योजना से करीब 28 लाख की लागत से खोदे गए तीन अमृत सरोवर चोरी हो गए हैं। रीवा जिले में पूर्वा मनीराम पंचायत के कठोली गांव में कुछ समय पर सरकारी योजना के तहत करीब 25 लाख रुपए की लागत से अमृत सरोवर व बांध का निर्माण कराया गया था। राजस्व दस्तावेजों में यह बांध भूमि रकबा क्रमांक 117 पर दर्ज है और 9 अगस्त 2023 में कम्प्लीट हो गया था। इसी प्रकार अमिलिया ग्राम पंचायत में किसान सरस्वती पाल और मिश्रीलाल पाल के खेत में खेत तालाब योजना के तहत अलग-अलग तालाबों का निर्माण किया गया था। गड़रियान टोला में करीब ढाई लाख की लागत से बनाए गए थे। अमिलिया पंचायत में मिश्रीलाल पाल और सरस्वती पाल के नाम पर खेत-तालाब योजना के तहत दो तालाबों का निर्माण हुआ। 2 लाख 56 हजार की लागत से ये तालाब गड़रियान टोला में बनाए गए थे।

केवल कागजों में बने, पैसा निकल गया- वास्तविकता में अमृत सरोवर बांध और खेतों में तालाब केवल दस्तावेजों में बनाए गए थे। जमीन पर इनका कोई वजूद ही नहीं था। एक नाले के पास मिट्टी डालकर उसे बांध के जैसा नाला क्लोजर का आकार देकर उसे अमृत सरोवर बांध बता दिया गया था, जो बारिश के पानी में मिट्टी बह जाने से गायब हो गया। कुल मिलाकर इन पंचायतों में सरकारी योजना के तालाबों के नाम पर भ्रष्टाचार और गबन किया गया है। मामले में पूर्व में जनपद से लेकर जिला प्रशासन तक शिकायतें हुई थीं। जांच भी हुई लेकिन सरकारी सिस्टम में सबकुछ ठीक-ठाक बता दिया गया। रिपोर्ट के अनुसार गांवों में अमृत सरोवर मौजूद मिले, खेत तालाब भी मिले और उनमें लबालब पानी भरा मिला। गांव के जागरूक युवाओं को जब इसकी भनक लगी तो उन्होंने सबक सिखाने के लिए अनूठे अंदाज में तालाब चोरी होने की मुनादी करना, लोगों को जागरूक करना और थाने से लेकर प्रशासन तक अपनी बात पहुंचाने का यह तरीका निकाला है।

शाम को मछली पकड़ी, सुबह तालाब चोरी हो गया

पुलिस थाने में बाल कुमार आदिवासी ने शिकायत में लिखा है कि मैं अमृत सरोवर बांध में रोजाना मछलियां पकड़ता था। शाम को मछली पकड़कर गया था। सुबह वापस आया तो तालाब चोरी हो चुका था। पता चला है कि आपास के दो और तालाब चोरी कर लिए गए हैं। इसी प्रकार अखिलेश सिंह ने शिकायत में कहा है कि 25 लाख की लागत से बने अमृत सरोवर का लापता होना दुभाग्यपूर्ण है। जहां लबालब पानी भरा था, वहां झाड़ियां उगी हैं। पड़ोसी गांव में भी दो तालाब गायब हैं। यदि जांच करवा ली जाए तो आसपास की 8 से 10 पंचायतों में भी तालाब चोरी के मामले मिल सकते हैं।

आश्चर्य की बात है तालाब रातों-रात चोरी हो गया!

शिकायत करने वालों में शामिल ललित कुमार कहते हैं कि हमारे यहां 25 लाख की लागत से बना अमृत सरोवर बांध रातों-रात गायब हो गया। बहुत ही शानदार और खूबसूरत दिखता था। बांध को जो व्यक्ति खोजेगा उसे हम लोग ईनाम भी देंगे। इस मामले में कलेक्टर प्रतिभा पाल ने मीडिया को बताया कि तालाब चोरी की शिकायत का मामला मेरी जानकारी में आया है। मामले में जांच करा रहे हैं। पहली नजर में यह मामला अनियमिताओं से जुड़ा समझ में आ रहा है।

धार्मिक पर्यटन के लिए सर्वाधिक पर्यटक मध्यप्रदेश आए

● मुख्यमंत्री डॉ. यादव बोले-पर्यटन विकास को मिलेगी नई गति

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत अभियान चल रहा है। राज्य सरकार भी इस अभियान में हरसंभव सहयोग कर रही है। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने पर्यटन विकास को रोजगार से जोड़ा है। पर्यटन बढ़ता है, तो लोगों को रोजगार के नए-नए अवसर मिलते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि देश में पर्यटन क्षेत्र बहुत तेजी से विकास कर रहा है। इसमें मध्यप्रदेश भी पीछे नहीं है। गत वर्ष धार्मिक पर्यटन के लिए देश में सर्वाधिक पर्यटकों ने मध्यप्रदेश को ही चुना।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को जारी संदेश में कहा कि हमारी सरकार सभी क्षेत्रों को समान रूप से बढ़ावा दे रही है। पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए शनिवार को ग्वालियर में रीजनल टूरिज्म कॉन्क्लेव आयोजित की गई है। इससे पहले रीवा और उज्जैन में टूरिज्म को लेकर ऐसी ही कॉन्क्लेव आयोजित की जा चुकी हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में समृद्ध वन क्षेत्र और वन्य जीव पर्यटन की अपार संभावनाएं विद्यमान हैं। कूनो में देश का पहला राष्ट्रीय चीता अभ्यारण्य है। साथ ही चंबल नदी के आसपास घड़ियाल अभ्यारण्य भी है। कछुओं की लुप्त प्रजातियों का भी संरक्षण मध्यप्रदेश में किया जा रहा है। माधव नेशनल टाइगर पार्क को इसी साल लोकार्पित किया गया है। पर्यटन विकास के जरिए प्रदेश का भविष्य और उज्ज्वल और समृद्ध हो, सभी युवाओं को रोजगार मिले, हमारी सरकार इसी भावना से काम कर रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश में ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व के कई स्थान हैं। देश में कुल 66 स्थान विश्व धरोहर स्थल के रूप में चिन्हित किए गए हैं, इनमें से 27 मध्यप्रदेश में स्थित हैं। यह राज्य के लिए बेहद गौरव की बात है। इस कॉन्क्लेव के जरिए ग्वालियर एवं चंबल अंचल में पर्यटन विकास को एक नई गति मिलेगी।

जल निगम में जमा बैंक गारंटियों की होगी सीबीआई जांच

ठेकेदारों की बैंक गारंटी फर्जी होने की जांच सौंपी, गृह विभाग ने दी परमिशन

भोपाल। प्रदेश में जल जीवन मिशन के कामों में गड़बड़ी और कमीशनबाजी के खुलासे के बीच अब जल निगम के कामों का ठेका लेने वाले ठेकेदारों द्वारा फर्जी बैंक गारंटी का उपयोग करने का मामला सामने आया है। इसके चलते हाईकोर्ट द्वारा दो ठेकेदारों के विरुद्ध सीबीआई जांच कराने के आदेश के आधार पर प्रदेश के एक अन्य ठेकेदार के विरुद्ध भी जांच की सहमति गृह विभाग ने दी है। विभाग ने कहा है कि सीबीआई की टीम

इस तरह के मामले में प्रदेश भर में जांच कर सकती है। गृह सचिव कृष्णा वेणी देशावतु के अनुसार जल निगम के कामों में गड़बड़ी को लेकर हाईकोर्ट द्वारा पूर्व में दिए गए आदेश के आधार पर यह सहमति दी गई है। इसमें कहा गया है कि जल निगम की परियोजनाओं मजोदिया मल्टी विलेज स्कीम तथा लखुंदर मल्टी विलेज स्कीम की तरह ही ठेकेदार मध्यप्रदेश बावरिया अंकिता कंस्ट्रक्शन द्वारा फर्जी बैंक गारंटी पेश की गई हैं। इसलिए इसकी जांच करना प्रस्तावित है। इसलिए दिल्ली विशेष पुलिस स्थापना अधिनियम 1946 की शक्तियों को प्रयोग में लाते हुए राज्य शासन इस मामले की जांच करने के लिए दिल्ली विशेष पुलिस स्थापना के सदस्यों की शक्ति और क्षेत्राधिकार का विस्तार राज्य में करने के लिए सहमति देता है। गृह विभाग की सचिव कृष्णावेणी देशावतु की ओर से इसको लेकर जारी नोटिफिकेशन में कहा गया है कि एमपी जल निगम की विभिन्न परियोजनाओं में ठेकेदारों द्वारा फर्जी बैंक गारंटी पेश करने को लेकर इसी साल तीन याचिकाएं तीरथ गोपीकोन लिमिटेड विरुद्ध एमपी जल निगम हाईकोर्ट में लगाई गई हैं। इस मामले में उच्च न्यायालय ने 5 मई 2025 को जारी आदेश में याचिकाकर्ता के अधिवक्ता द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर सीबीआई जांच के लिए आदेशित किया था। गृह सचिव के आदेश में कहा है कि पीएनबी शाखा कोलकाता बागुईहाटी (उत्तर 24 परगना) पश्चिम बंगाल 700059 द्वारा जारी बैंक गारंटी के मामले में 20 मार्च 2023 को पुलिस स्टेशन रावजी बाजार इंदौर में शिकायत दर्ज कराई गई थी। दोनों ही पक्ष राज्य से संबंध रखते हैं लेकिन धोखाधड़ी किसी अन्य राज्य में होना पाया है। हाईकोर्ट ने सीबीआई को जांच करने के लिए आदेशित किया जिसमें पता करना है कि याचिका दायर करने वाले को वास्तव में तीसरे पक्ष द्वारा धोखा दिया गया है या याचिका करने वाले ने प्रतिवादी को धोखा दिया है।

सिंधिया परिवार की तीसरी पीढ़ी के हाथ एमसीए की कमान

महानआर्यमन के सामने कोई फॉर्म नहीं, सबसे युवा अध्यक्ष बनेंगे

भोपाल। मध्यप्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन (MPCA) की कमान सिंधिया परिवार की तीसरी पीढ़ी की हाथ में होगी। महानआर्यमन सिंधिया का MPCA प्रेसिडेंट बनना तय हो गया है। एमपीसीए चुनाव के लिए शनिवार को नामांकन की अंतिम तिथि थी, लेकिन महानआर्यमन के अलावा प्रेसिडेंट पद के लिए अन्य किसी ने भी नामांकन नहीं भरा है। इससे पहले माधवराव सिंधिया और ज्योतिरादित्य सिंधिया भी मप्र क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष रह चुके हैं। महानआर्यमन एमपीसीए के सबसे युवा अध्यक्ष होंगे। एमपीसीए की नई कार्यकारिणी का चुनाव 2 सितंबर को होना है। 30 अगस्त तक

नामांकन की अंतिम तिथि थी। नई कार्यकारिणी मंगलवार को एमपीसीए की एजीएम में तीन साल के लिए चुन ली जाएगी। एजीएम में शामिल होने के लिए ज्योतिरादित्य सिंधिया और महानआर्यमन 1 सितंबर को इंदौर पहुंच जाएंगे।

2019 में यह रहा था परिणाम: निर्विरोध रूप से अभिलाष खांडेकर अध्यक्ष, रमणीक सलूजा उपाध्यक्ष, सिद्धियानी पाटनी सहसचिव चुनी गई थी। सचिव पद के लिए संजीव राव ने अमिताभ विजयवर्गीय को 17 और कोषाध्यक्ष पद के लिए पवन जैन ने प्रेमस्वरूप पटेल को 78 वोटों से हराया था। क्रिकेट कमेटी में प्रशांत द्विवेदी ने सर्वाधिक 171, योगेश गोलवलकर ने 148 और मुर्तजा अली ने 137 वोट के साथ जीत दर्ज की थी। देवाशीष निलोसे को 115 और सुनील लाहोरे को 38 वोट मिले थे। कार्यकारिणी सदस्य के चार पदों पर अक्षय धाकड़, धीरज श्रीवास्तव, रघुराज सिंह चौरड़िया, संग्राम कदम निर्विरोध चुने गए थे। चुनाव में भाजपा महासचिव कैलाश विजयवर्गीय की अध्यक्षता वाले आईडीसीए को सर्वसम्मति से संस्थागत सदस्य की कैटेगरी में चुना गया था।

भोपाल के बागमुगालिया में बच्चे पर कुत्तों का अटैक

पैर में काटा, चौकीदार को देख भागे, सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई घटना

भोपाल। भोपाल के बागमुगालिया में एक 10 साल के बच्चे पर दो स्ट्रीट डॉग्स ने हमला कर दिया। इससे बच्चा बुरी तरह से जख्मी हो गया। कुत्तों ने उसे पैरों में काटा। कुत्तों के हमले से घबराए बच्चे को चौकीदार ने बचाया। घटना शुक्रवार रात की बताई जा रही है। बागमुगालिया कटारा हिल्स स्थित पेबल बे फेस-1 में दो आवारा कुत्तों ने बच्चे पर हमला किया। बच्चे घर के बाहर खेल रहा था। तभी दो डॉग्स दौड़ते हुए आए और हमला कर दिया। पैरों में काटने से बच्चा जख्मी हो गया। चौकीदार ने कुत्तों को भगाया। स्थानीय लोगों के अनुसार, नगर निगम की टीम कई बार इन कुत्तों को पकड़ने आती है, लेकिन वहां मौजूद कुछ डॉग लवर्स इन कुत्तों को पकड़ने नहीं देते। घटना के बाद स्थानीय रहवासियों ने कहा कि, इस तरह की घटनाओं में जिन लोगों ने कुत्तों को पकड़ने से रोका, उन पर भी जिम्मेदारी तय की जानी चाहिए। ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सके। इधर, बच्चे

का इलाज प्राइवेट अस्पताल में कराया गया। वह ठीक बताया जा रहा है। इधर, कुत्तों के शिकार के मामलों की बात करें तो भोपाल में 6 महीने में 19 हजार 285 लोगों को कुत्तों ने काटा है। साल 2024 और इस वर्ष माह जनवरी से जून 2025 तक की स्थिति में डॉग बाइट्स के मामलों की रिपोर्ट नेशनल हेल्थ मिशन से मांगी गई थी। रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2024 में भोपाल में कुल 19 हजार 285 डॉग बाइट्स के मामले दर्ज किए गए।

राजधानी के हमीदिया में पहली बार बेरियाट्रिक सर्जरी

पेट किया छोटा, जिससे वजन कम हो, महिला का बीएमआई 42 और छोटी आंत हर्निया में फंसी थी

भोपाल। भोपाल के हमीदिया अस्पताल में पहली बार बेरियाट्रिक सर्जरी की गई। जिसके जरिए मोर्बिड ओबेसिटी और हार्निया से जुड़े गंभीर रोग से पीड़ित महिला का जीवन बचाया जा सका। डॉक्टरों के अनुसार, महिला मोर्बिड ओबेसिटी यानी अत्यधिक मोटापे से जूझ रही थी। उसका बीएमआई 42 था। इसके अलावा यह उपलब्धि इसलिए खास है क्योंकि मरीज को न केवल जानलेवा हर्निया था। इसके अलावा उसका वजन और मोटापा ऑपरेशन को और भी चुनौतीपूर्ण बना रहा था। वरिष्ठ सर्जन डॉ. समीर शुक्ला ने बताया कि महिला की जान बचाने के लिए स्लीव गेस्ट्रोक्टॉमी के साथ आईपीओएम प्लस मेष तकनीक (IPOM Plus Mesh Technique) का इस्तेमाल किया गया। यह तकनीक हमीदिया अस्पताल में पहली बार अपनाई गई। इसमें पेट का कुछ हिस्सा छोटा किया

गया ताकि मरीज का वजन कम हो और साथ ही मेष (जाली) लगाकर हर्निया की दीवार को मजबूत किया गया। जब BMI 40 से ऊपर हो जाता है, तब इसे मोर्बिड ओबेसिटी कहते हैं। यह हार्ट अटैक, डायबिटीज और स्ट्रोक जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ाती है। ऐसे में बेरियाट्रिक सर्जरी मोटापे के कारण होने वाली बीमारियों को कम करने का प्रभावी तरीका है। जिससे वजन घटाने और जीवन की गुणवत्ता सुधारने में मदद मिलती है। 46 साल की महिला कई सालों से लम्बर हर्निया (कमर के पास का हर्निया) की समस्या से पीड़ित थीं। धीरे-धीरे यह बढ़कर उनके पेट के लगभग एक-तिहाई हिस्से तक फैल गया था। जांच में सामने आया कि उनका बॉडी मास इंडेक्स (BMI) 42 था और वजन 92 किलो।

जिस 6 एकड़ जमीन पर कब्जा, उसकी कीमत 20 करोड़

3 मंजिला स्कूल बिल्डिंग भी जद में, मछली परिवार की पड़ताल शुरू

भोपाल। भोपाल के अनंतपुरा कोकता में पशुपालन विभाग की 65 में से करीब 6 एकड़ जमीन में कब्जा साबित हो गया है। इस जमीन की मौजूदा बाजार कीमत 20 करोड़ रुपए से अधिक है। वहीं, इस पर अभी करोड़ों रुपए का स्ट्रक्चर खड़ा है। एक मीडिल स्कूल की 3 मंजिला बिल्डिंग भी कब्जे की जद में है। जिस पर मछली परिवार के दखल की पड़ताल भी शुरू हो गई है। प्रारंभिक रिपोर्ट के अनुसार, डायमंड सिटी में 3 मंजिला स्कूल बिल्डिंग है, जो डेढ़ से दो हजार स्क्वायर फीट जमीन पर बनी है। अफसरों को आशंका है कि इस स्कूल बिल्डिंग पर मछली परिवार का सीधे तौर पर नहीं, पर दखल जरूर है। इसलिए बिल्डिंग से जुड़ी सभी जांच की जा रही है। हालांकि, मछली परिवार से जुड़े वकील पहले ही गोविंदपुरा एसडीएम को लिखित में दे चुके हैं कि उनकी सीमांकन कार्रवाई में अनपत्ति है। शावेज अहमद की ओर से वकील विशेष नामदेव ने एसडीएम को आवेदन दिया कि मेरे या मेरे परिजनों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से खसरा नंबर-43, 44, 49/19, 50/21, 51/8, 54/43, 55/44, 57/43, 58/8, 60/36, 79/3 पर कभी कोई स्वामित्वाधिकार, कब्जा या अतिक्रमण नहीं

रहा है और न ही वर्तमान में है। यदि किसी कारणवश मेरे या परिवार के विरुद्ध उक्त भूमि संबंधित कब्जे या अतिक्रमण का संदेह, अभियोग प्रस्तुत किया गया है तो वह पूर्णतः असत्य, निराधार और विधिक दृष्टि से अवैध है। इस जमीन के सीमांकन, जांच या किसी भी प्रकार की वैधानिक कार्रवाई में मेरी या परिवार की वैधानिक कार्रवाई में कोई आपत्ति नहीं है। गोविंदपुरा एसडीएम रवीशकुमार श्रीवास्तव के अनुसार, सीमांकन करने के बाद अब रिपोर्ट तैयार की जा रही है, जो जल्द ही वरिष्ठ अधिकारियों के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी।

तीन दिन तक सीमांकन, यह कब्जा सामने आया

जानकारी के अनुसार, पशुपालन विभाग की 65 एकड़ जमीन का तीन दिन का सीमांकन किया गया। इसमें करीब 40 बिल्डिंग, प्लाट, 30 दुकानें, एक पेट्रोल पंप, एक स्कूल समेत दो-तीन कॉलोनियों के भी कब्जे मिले हैं। शुक्रवार को सीमांकन कार्य पूरा होने के बाद शनिवार को पटवारियों की टीम विस्तृत रिपोर्ट तैयार करने में जुटी है। किस रकबे में किसका और कितना कब्जा है? ये रिपोर्ट में बताया जाएगा। यह रिपोर्ट एसडीएम श्रीवास्तव के पास पहुंचेंगी। फिर सोमवार को कलेक्टर सिंह के सामने रखी जाएगी। इसके बाद चिंह्नित कब्जाधारियों को पशुपालन विभाग से नोटिस भेजे जाएंगे। यदि कब्जाधारी जमीन खाली नहीं करते हैं तो प्रशासन तोड़ने की कार्रवाई करेगा। इस मामले में स्कूल के संचालक अमिताभ वर्मा ने बताया कि हमने स्कूल के लिए 2400 स्क्वायर फीट जमीन दिसंबर 2021 में सिद्धार्थ सिन्हा ने खरीदी थी। जब इस जमीन के बारे में जानकारी जुटाई गई तो यह सही बताई गई थी। इसके बाद हमने एसडीएम ऑफिस से नामांकन कराया। सभी अनुमति लेने के बाद ही बिल्डिंग बनाई और स्कूल संचालित करना शुरू किया। स्कूल को लेकर भी जिला शिक्षा विभाग से सभी अनुमति और मान्यता प्राप्त की गई। हाल ही में हुए सीमांकन में हमारे स्कूल की बिल्डिंग को भी पशुपालन विभाग की जमीन में होना बताया जा रहा है। यह हैरान करने वाला है, क्योंकि हमने तो बिल्डर से जमीन खरीदी और फिर रजिस्ट्री कर सभी अनुमतियां ली गई थीं। इस बारे में बिल्डर सिन्हा से पूछा तो उन्होंने बताया कि नक्शा अपडेट नहीं होने की वजह से उनकी 1.85 एकड़ जमीन सरकारी रिकॉर्ड में बताई जा रही है। इसके लिए आवेदन एसडीएम ऑफिस में लगाया है। स्कूल संचालक वर्मा का कहना है कि हम मछली परिवार को नहीं जानते। किसी भी प्रकार का लेन-देन नहीं है। 34 साल बाद पशुपालन विभाग को सीमांकन के पीछे भोपाल के मछली परिवार पर हुई कार्रवाई है। ड्रग्स और रेप केस के मामले में इस परिवार के दो सदस्य जेल में बंद है, जबकि अन्य पर भी कार्रवाई की जा रही है। इसके बाद 30 जुलाई और फिर 21 अगस्त को जिला प्रशासन ने दो बड़ी कार्रवाई करते हुए 7 बड़े अवैध निर्माण जमींदोज कर दिए। ये सभी सरकारी जमीन पर बनाए जाना सामने आए। इस जमीन की कीमत सवा सौ करोड़ रुपए आंकी गई।

हमेशा रहेगा थियेटर और सिनेमा का जादू : चेतन पंडित

साक्षात्कार

मोहन वर्मा
लेखक पत्रकार हैं।

दिन ब दिन नई तकनीक सामने आने के साथ थियेटर से लेकर सिनेमा और ओटीटी तक मनोरंजन के जितने भी साधन है वे हर दिन एक नई परिभाषा गढ़ रहे है। बाहरी तकनीक आती जाती रहेगी मगर मूल मूल ही रहेगा। कन्टेन्ट हमेशा अपनी रचनात्मकता के साथ अपना रास्ता बनाकर ज़िंदा रहेगा। एआई जैसी तकनीक से भी घबराने की जरूरत नहीं है, थियेटर और सिनेमा का जादू बरसों बरस नई तकनीक से निखरता जाएगा। जरूरत चुनौतियों से सीखने की है।ये बात थियेटर,सिनेमा और टीवी सीरियल्स के दमदार अभिनेता चेतन पंडित ने कही।

थियेटर और छोटे से लेकर बड़े परदे तक अपनी खास पहचान बना चुके चेतन पंडित मालवा और देवास के बाशिंदे हैं । सन 2004 में लोकनायक जयप्रकाश से अपना फ़िल्मी सफ़र शुरू करके अपहरण, इश्क फ़ारेवर, अग्निपथ, विकल्प, गंगाजल, राजनीति,चक्रव्यूह,ए वेडनस डे, आरक्षण, जीना इसी का नाम है जैसी कई महत्वपूर्ण फिल्मों में अभिनय के साथ टीवी सीरियल जंजीर, पुर्नविवाह, कहीं तो होगा, अर्धांगिनी, सरस्वतीचंद, तुझ संग प्रीत लगाई, कलश, बड़ी देवरानी और इन जैसे कई सीरियल्स में भी चेतन पंडित ने अपने अभिनय की छाप छोड़ी है।

नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा में प्रवेश लेकर प्रदेश के एकमात्र छात्र के रूप में चयनित होकर चेतन पंडित ने न केवल अभिनय की बारीकियां सीखी बल्कि थियेटर की दुनिया के नामचीन कलाकारों के साथ काम करके अनुभव भी बटोरते रहे। यहाँ यह बताना प्रासंगिक होगा कि अभिनय प्रशिक्षण के लिए देश की ख्यात संस्था नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा में चयनित होना बहुत ही मुश्किल है।नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा में एडमिशन के लिए दिल्ली, मुम्बई,कोलकाता और बैंगलुरू जैसे महानगरों से प्राथमिक तौर पर कुल 80 छात्रों का चयन किया जाता है और फाइनल तक आते आते मात्र 20 को प्रवेश मिलता है। यहाँ छात्र की प्रतिभा से ज्यादा उसमें सीखने की ललक को देखा परखा जाता है। चेतन पंडित ने थियेटर के माध्यम से 75 से अधिक नाटकों में विभिन्न रोल निभाए है। संस्था में हरिशंकर परसाई के व्यंग्य भगवान का एक्सटेंशन का मालवी मंचन भी साथी कलाकारों के साथ चेतन पंडित की एक उपलब्धि है।

इन्दौर-देवास में अपनी पढ़ाई पूरी करके अपनी जिद और जूनून से चेतन पंडित ने नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा में एडमिशन लिया और उनका अभिनय का सफ़र शुरू हुआ। यहाँ से अपनी पढाई और प्रशिक्षण के बाद शुरुवाती संघर्ष के साथ वे प्रकाश झा कैम्प से जुड़ गए और फिर तो लगातार काम करते-सीखते सफलता की सीढ़ियां चढ़ते गये।

चेतन पंडित ने थियेटर,सिनेमा और ओटीटी के बारे में पूछे जाने पर बताया कि हरेक प्लेटफार्म पर काम करने का अपना आनंद हैं। कोरोना काल के दौरान ओटीटी का फैलाव हुआ और चूंकि ओटीटी सेंसर के दायरे से बाहर है इसलिए उसका अपना बड़ा दर्शक वर्ग है जिसे हिंसा और सैक्स पसंद है। हालांकि यहाँ साफ़ सुथरी शोर्ट फ़िल्में भी है जिन्हें लोग पसंद कर रहे है। आज सभी प्लेटफार्म की रिच बढी है,मगर क्वालिटी कंटेंट ही इन सबमें टिक पा रहा है। थियेटर से फिल्मों में आये कई नामचीन कलाकार आज दर्शकों की पहली पसंद है।

चेतन पंडित का सपना है कि शहर में एक ऐसा कला केंद्र विकसित किया जाए जहाँ कला की सभी विधाओं फिर वो लेखन/स्क्रिप्ट राइटिंग हो, अभिनय हो,गायन,वादन,रेखांकन हो,नृत्य हो या लोक कलाएं । नई पीढी को कला की विविध धाराओं के जोड़ना बहुत जरूरी है। चेतन पंडित इन दिनों आने वाले विभिन्न सीरियल्स और फिल्मों में व्यस्त है और आने वाले दिनों में हम उन्हें छोटे और बड़े परदे पर अलग अलग किरदार निभाते देख पायेंगे।

लघुकथा

छत्र

- श्रद्धा जलज घाटे

नव निर्मित मंदिर में नव प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा के कई आयोजन होने थे। मंदिर के फर्श, दरवाजा, भित्ति-चित्र, कलश, छत्र, घंटी आदि शानदार लगने थे। खर्चा करोड़ों का था इसलिए बोलियां लगाने वाले धर्म प्रेमी श्रद्धालुओं में जोश था।

सेवानिवृत्त शिक्षक, गुरुजी अपनी वृद्ध मां और विवाह योग्य बेटी का चेहरा ध्यान में लिए एक छोटा सा चेक लेकर बैठे थे। वे हर बार पहली बोली लगाते लेकिन दूसरे श्रद्धालु बोली आगे बढ़ा ले जाते।

उनके पढ़ाये हुए विद्यार्थी विभिन्न व्यवसायों, व्यापार में लगे हुए थे। जो लाखों में बोलियां लगा रहे थे। यह तो गनीमत रही कि गुरुजी द्वारा लगाई गई छत्र की बोली इस बार आगे नहीं बढ़ी और उन्हें मिल गई।

कुछ दिनों बाद जब मंदिर का उद्घाटन हुआ, तो छत्र की अभूतपूर्व शोभा और उसकी दमक देखकर मंदिर में उपस्थित सभी की आँखें चुँधिया गईं।

छत्र दमक रहा था ! गुरुजी के उत्तम आचरण, सीमित आय के बावजूद भगवान के प्रति उनके त्यागमय समर्पण, साथ ही उनके विद्यार्थियों की उनके प्रति श्रद्धा से, जिन्होंने छत्र की बोली को जानबूझकर आगे नहीं बढ़ने दिया था। मानो खुद के साथ प्रतिमा को भी गुरुजी के छत्र तले ही रखना चाहते हों। नव प्रतिमा के आलोक से पूरा मंदिर, ज्ञान,धर्म, अध्यात्म, श्रद्धा, प्रेम, त्याग, समर्पण से दीप्तिमान था।

लघुकथा

कहते थे तुम

सीमा देवेन्द्र

कहते थे तुम अक्सर
'ज़रा उनकी सोचों कि
जिनको हासिल नही हूं मैं'

निश्चित ही
लेकिन मुहब्बत की
कोई बराबरी नहीं होती

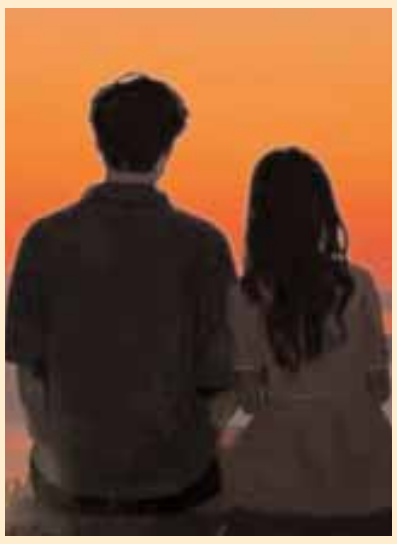

प्रेम केवल समर्पण है
भरोसे का बंधन है
अनकहा स्पन्दन है

प्रेम दरिया की तरह बहते रहना है
तो समन्दर की तरह
ठहराव भी जरूरी है

जानते हैं ये
सीपी और मोती
जो समन्दर में रहते हैं

या के नदी के वो कनारे
जो महसूस तो करते हैं
लहरों को ....लेकिन
हासिल नही हुए कभी !
तुम्हारी तरह !

कविता

हम भी आदमी कहा सकें

प्रतिभा मिश्रा

श्री गणेश हम करें कि
रात ढल के पौ फटे
जिंदगी की लाश पर से
मौत का कफन हटे।
श्री गणेश हम करें कि
जी सकें जिला सकें
प्रेम की ही एक बूंद
पी सकें पिला सकें
कोई गिर पड़े कहीं
न हम उसे उठा सकें
मुश्किलों से जूझ कर
न गीत गुनगुना सकें
घर इसी जहां को
न स्वर्ग हम बना सकें तो
क्या करेगा आदमी
जो चांद पर भी जा सके
दो दिलों की दूरियों को
पास भी न ला सकें
हाथ दो मिलें न फिर भी
रोटियां जुटा सकें
जुल्म देखते रहें
न आंख भी उठाई सकें
तो हक नहीं हमें कि
हम भी आदमी कहा सकें !

ग़ज़ल

इंसान ने किया

कमलेश कुमार दीवान

कुछ हवा ने किया कुछ तूफान ने किया
आंधी का काम भी यहां इंसान ने किया।

बादल के फूट पड़ने से खिसके पहाड़ भी
बाकी बचा ही क्या सब आसमान ने किया।

बहुतेरी सड़क बन गई जंगल के बीच से
रूठे हैं पेड़ पौधे ये क्या अनजान ने किया।

कुछ तो कुसूर अपना कुछ जरूरतों का था
सब ढह गया है जो यहां नादान ने किया।

क्या क्या गिनाए दुःख यहां घाटी पहाड़ के
'दीवान' इस जहां में सब पहचान ने किया।

कहानी

सुनील कुमार महला

आराधना

हर्षिता की अभी उम्र ही क्या थी, कि उसके पिताजी दुनिया को अलविदा कह गए। बमुश्किल पैंतीस-छत्तीस वर्ष के रहे होंगे हर्षिता के पिताजी। एक साधारण-सा परिवार, जीवन की चुनौतियों से जूझता हुआ, और अचानक आई विपत्ति ने सबकुछ बदलकर रख दिया। हैजे की बीमारी ने उन्हें निगल लिया था। कहते हैं, जिस दिन उन्हें खून की उल्टियाँ हुईं, उसी दिन वह शराब पीकर घर लौटे थे। किसी ने सोचा भी नहीं था कि यह उनका आख़िरी दिन होगा। उस रात हर्षिता की मां पर जैसे वज्रपात हो गया। पति का सहारा छिन गया, और सामने थी मासूम बच्ची की परवरिश की कठिन डगर।

गांव की परंपराओं और समाज के तानों के बीच एक अकेली विधवा का जीवन आसान न था। मगर मां ने हार नहीं मानी। घर में आय का कोई साधन नहीं था। कुछ खेत ज़रूर थे, मगर अकेली औरत खेत संभाले तो कैसे? फिर भी उसने साहस जुटाया। खेतों में मजदूरों के साथ काम किया, घर-घर जाकर लोगों के कपड़े सिलकर थोड़ा-बहुत कमाया। दिन-रात मेहनत की, ताकि हर्षिता को किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहे, उसे किसी के आगे हाथ न फैलाने पड़ें, और उसे शिक्षा से वंचित न होना पड़े। गांव की औरतें कई बार कहतीं–'इतना कष्ट क्यों उठाती हो बहन ? लड़की ही है न, दो-चार बरस में इसे ब्याह दो, सारा का सारा बोझ हल्का हो जाएगा।' लेकिन हर्षिता की मां अडिग थी। वह जानती थी कि बेटी को शिक्षित करना ही उसके जीवन का उद्देश्य है। हर्षिता धीरे-धीरे बड़ी होने लगी। उसे हमेशा लगता कि उसकी मां किसी पत्थर की तरह मज़बूत है।

बरसों तक उसने कभी अपने दुख का इज़हार नहीं किया। भूख लगती तो भी मां पहले बेटी को खिलाती, बाद में खुद के लिए रोटी सेंकती। बारिश के दिनों में जब छत टपकती तो मां खुद भीग जाती, लेकिन बेटी के ऊपर कभी पानी की बूंदें तक न पड़ने देती। रात को पढ़ाई करते-करते हर्षिता की आंखें झपक जातीं, तो मां पंखा झलते-झलते उसके सिर पर हाथ फेरती और कहती–'बिटिया, नींद आ रही हो तो लेट जा। मां को तो नींद अब आती ही कहाँ है।' हर्षिता को अपनी मां इतनी प्रिय थी कि वह अक्सर कहती–'मां, मेरा वश चले तो मैं तुम्हें कभी मरने न दूं। तुम्हारे मंदिर बनवाऊँगी, ताकि सब लोग तुम्हें पूजें।' हर्षिता की मां ने कभी दूसरी शादी का विचार नहीं किया। गांव के लोग कभी ताना मारते, तो कभी समझाते भी–'अकेली औरत को जीवन बहुत कठिन हो जाएगा, भविष्य के बारे में सोचो। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है। बहुत बड़ा जीवन है, ऐसे कैसे कटेगा?' मगर वह डटी रही। उसने अपने जीवन को जैसे अपनी बेटी के नाम कर दिया। उसकी दिनचर्या सिर्फ दो कामों के इर्द-गिर्द घूमती–मेहनत करके घर चलाना और हर्षिता को पढ़ाना। दिन का उजाला खत्म होते ही वह बेटी को अपने फूस के छप्पर में पढ़ाई के लिए दीये के पास बैठा देती। खुद भी बगल में सूत कातती, ताकि कुछ अतिरिक्त आमदनी हो सके।

एक दिन हर्षिता ने अपनी मां से पूछा– 'मां, तुम इतनी तकलीफ़ क्यों सहती हो? जब पिताजी चले गए, तब तुम चाहतीं तो सब छोड़ सकती थीं।' मां ने मुस्कुराते हुए कहा– 'बिटिया, मां का जीवन अपने बच्चे के लिए ही तो होता है। अगर मैं हार मान लूं, तो तुम्हारा भविष्य अंधेरे में चला जाएगा। तुम्हारे पापा तो चले गए, लेकिन तुम्हें ऊँचा उठाना मेरा कर्तव्य है।' ये शब्द जैसे हर्षिता के मन पर अमिट छाप छोड़ गए थे।समय के पंख लगते गये। हर्षिता ने अपनी पढ़ाई पूरी की। कॉलेज तक पहुँचने में कितनी बाधाएँ आईं, लेकिन मां ने हर दीवार तोड़ी। उसने दूसरों के घर काम किए, लोगों के कपड़े धोए, खेतों में खून-पसीना बहाया, लेकिन बेटी की फीस और किताबों में कभी कमी नहीं आने दी। जब हर्षिता ने एक अच्छे पद पर नौकरी हासिल की, तो मां की आंखों से बरसों से दबा हुआ गर्व और खुशी का सैलाब बह निकला। हर्षिता ने मां को गले लगाकर कहा–'मां, ये सफलता मेरी नहीं, तुम्हारी है। आज जो मैं हूँ, सब तुम्हारी वजह से हूँ।'

अब हर्षिता का सपना सच हो चुका था। उसने सचमुच मां का मंदिर नहीं बनवाया, पर अपने जीवन के हर कोने को मां की पूजा से भर दिया। उसके घर की दीवारों पर मां की तस्वीर थी, उसके दिल में मां का सम्मान।वह अक्सर सोचती–'भगवान को हमने देखा नहीं, पर मां का त्याग, मां का समर्पण ही तो भगवान का रूप है।' मां का जीवन त्याग और समर्पण का दूसरा नाम है। हर्षिता की मां ने यह साबित कर दिया कि स्त्री चाहे कितनी भी कठिनाइयों से गुज़रे, अगर उसका उद्देश्य स्पष्ट हो और उसका प्रेम सच्चा हो, तो वह किसी भी पर्वत को हिला सकती है। हर्षिता के लिए उसकी मां सिर्फ मां नहीं, बल्कि उसकी दुनिया, उसका मंदिर और उसकी आराधना थी।

व्यंग्य

मगज़ मारी डिबेट में आपका स्वागत है

विनोद कुमार विक्की
लेखक व्यंग्यकार हैं।

'बोल बच्चन' वाले इस कार्यक्रम में एक एंकर सहित लगभग छः बंदे सशरीर उपस्थित होते हैं। शामिल वाक् योद्धाओं में एक लड़ाकू महानुभाव किसी पार्टी का प्रवक्ता या कार्यकर्ता होता है, तो एक लंबी दाढ़ी वाले कोई मौलाना साहब या फिर गेरूआ धारी बाबा मौजूद रहते हैं एक प्रतिभागी महिला हो इस बात का विशेष ख्याल रखा जाता है। एक महानुभाव सत्ताधारी पार्टी का, तो विपक्ष से किसी एक बोलकड़ महापुरूष को इस बहस में आमंत्रित किया जाता है। कभी-कभी पड़ोसी मुल्क के किसी अतिथि को भी ऑनलाइन आमंत्रित किया जाता है। हालांकि पड़ोसी मुल्क के आमंत्रित अतिथि को बोलने से ज्यादा एंकर के द्वारा खरी-खोटी सुनना पड़ जाता है अथवा कार्यक्रम के बीच में डिस्कनेक्ट कर दिया जाता है।

टीआरपी की लालसा के वशीभूत कमोबेश सभी न्यूज चैनल पर प्राईम टाईम डिबेट कार्यक्रम का एक ट्रैंड सा चल गया है।

'बोल बच्चन' वाले इस कार्यक्रम में एक एंकर सहित लगभग छः बंदे सशरीर उपस्थित होते हैं। शामिल वाक् योद्धाओं में एक लड़ाकू महानुभाव किसी पार्टी का प्रवक्ता या कार्यकर्ता होता है, तो एक लंबी दाढी वाले कोई मौलाना साहब या फिर गेरूआ धारी बाबा मौजूद रहते हैं एक प्रतिभागी महिला हो इस बात का विशेष ख्याल रखा जाता है। एक महानुभाव सत्ताधारी पार्टी का, तो विपक्ष से किसी एक बोलकड़ महापुरूष को इस बहस में आमंत्रित किया जाता है। कभी-कभी पड़ोसी मुल्क के किसी अतिथि को भी ऑनलाइन आमंत्रित किया जाता है। हालांकि पड़ोसी मुल्क के आमंत्रित अतिथि को बोलने से ज्यादा एंकर के द्वारा खरी-खोटी सुनना पड़ जाता है अथवा कार्यक्रम के बीच में डिस्कनेक्ट कर दिया जाता है।

डिबेट के विषयों के तहत आतंकवाद, सरकारी कार्यों की समीक्षा,धर्म, गाय, बीफ, मंदिर-मस्जिद, चीन, पाकिस्तान,कालाधन,एसआईआर, तीन तलाक़, वक्फ बोर्ड, महागठबंधन दरार,सृजन,रोहिंग्या, ऑपरेशन सिंदूर आदि जैसे सनसनीखेज व ताजातरीन मुद्दों को शामिल किया जाता है।

इन मुद्दों पर चर्चा का श्रीगणेश ये सभी ऐसे दोस्ताना माहौल से शुरू करते है, मानो सर्वसम्मति से राष्ट्रहित मे कोई निर्णय लेने वाले हो या समाज या राष्ट्र को कोई शांति संदेश देने वाले हो।

कहने को तो यह प्रोग्राम किसी चैनल या एंकर द्वारा प्रायोजित किया जाता है, किंतु यह कार्यक्रम पूर्णतः आमंत्रित किए गए अतिथियों के 'अपनी डफली अपना राग' द्वारा ही संचालित एवं प्रसारित होता है।

एंकर की भूमिका महज आग में घी डालने वाली होती है। ये एक-एक प्रश्न पूछकर बारी-बारी से सभी महापुरुषों का मंतव्य जानने लगते है या दूसरे शब्दों में कहें तो सभी अतिथियों को सुलगा देते है।

फिर क्या डिबेट में शामिल अतिथि उलझ जाते है शब्दों की तोप चलाने में। मौलाना साहब गेरूआ धारी पर शब्दों के तलवार से प्रहार करते हैं तो बाबाजी का

शब्दभेदी त्रिशूल मौलाना की ओर सांय सांय चलने लगता है।

एक वक्ता विपक्षी पार्टी को परिस्थिति का जिम्मेदार मानता है तो दूसरा पक्ष सभी प्रकार के हालात के लिए 'गुड़ का गाछ केताड़ी' सत्ता प्रमुख को ही मुख्य कर्ता-धर्ता साबित करने में लग जाता है ।

प्रश्न पूछने के बाद एंकर की भूमिका गौण हो जाती है और उसके बाद तो टीवी स्क्रीन पर शब्द बाण,शब्द गोली, वाक् गन,वाक् मिसाइल चलनी शुरू हो जाती है। ये सभी बंदे फिर कहां किसी की सुनने वाले ये तो झगड़ालू सास की तरह सामने वाले को बहू मानते हुए भिड़ जाते है खरी खोटी सुनाने में।

जोर-जोर से चिल्लाते हुए ये अपने विचारों का विस्फोट इस प्रकार से करते है मानों ये सुप्रीम कोर्ट में जज के सामने व्यथित फरियादी हो और सामने वाले ने इनकी जमीन हड़प ली हो या इनसे कर्ज लेकर मुकर गया हो।

देखते ही देखते इनकी चिल्ल-पों इतनी बढ़ जाती है कि ये भाषा की मर्यादा और गरिमा को भूलकर पशुवत व्यवहार करते हुए अपशब्दों पर उतर आते हैं, और डिबेट के मूल विषय से विषयांतरित हो जाते है।

बीच बीच में एंकर इन्हें इनकी मर्यादा एवं भाषा का एवं विषय का बोध उसी प्रकार दिलाते रहते है जिस प्रकार 'लो बैट्री' की सूचना मोबाइल फोन रिमाइंडर द्वारा बार-बार दी जाती है।

स्थिति ऐसी होती है जैसे संसद में दो पार्टियों के नेता एक दूसरे के साथ 'आरोप-प्रत्यारोप' का गेम खेलते खेलते कुर्सी-टेबल पटकना शुरु कर दिये हो और अध्यक्ष मर्यादा की दुहाई देकर उन बुद्धिजीवियों को शांत करने की कोशिश करता है और हालात बेकाबू होने की स्थिति में सदन को स्थगित कर दिया जाता है। माहौल को गरमाता देख एंकर भी अपनी सूझ-बूझ से बीच-बीच में कमर्शियल ब्रेक का जुगाड़ लगा लेता है। इनके वाक् युद्ध में प्रस्तुत विचार ना तो शामिल अतिथियों या एंकर के पल्ले कुछ पड़ता है और ना ही देख रहे दर्शकों के।

अंत में अनिर्णीत निष्कर्ष के साथ मुस्कुराते हुए एंकर सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित करता है और अगले दिन एक नए सब्जेक्ट पर भेजा फ्राय डिबेट के साथ वापस लौटने का वायदा करते हुए कार्यक्रम के समाप्ति कि घोषणा करता है।

यदि आप भी अशांत प्रिय स्वभाव के जीव हैं। वाहनों के कानफाड़ू शोर, डीजे की भाईब्रेशन मोड के ध्वनि प्रदूषण का आनंद लेकर बोर हो चुके हैं, तो न्यूज चैनल के प्राईम टाईम मगज़ मारी डिबेट में आपका स्वागत है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भारतीय ग्रंथों में वेदियों की सज्जा और इंस्टालेशन

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

यजुर्वेद के उन्नीसवें अध्याय में 38वां मंत्र है-

'जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे।

अनाविद्धया तन्वा जय त्वं स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु।।'

जिसका व्याख्यान कि-

'(यत्) जो शूरवीर (वर्मी) कवच धारण करके (समदाम् उपस्थे) संग्रामों में (याति) जाता है वह (जीमूतस्य ईव) मेघ के समान (प्रतीकं) प्रतीत होने लगता है। वह मेघ के समान श्याम एवं शत्रुओं पर शस्त्रास्त्र की वर्षा करने में समर्थ होता है। अर्थात जिस प्रकार मेघ निरंतर बिजलियों, गर्जनाओं और बराबर पड़ने वाली बौछारों से बड़ा ही भयंकर, भयावह प्रतीत होता है उसी प्रकार आग्नेयास्त्रों की लपट, शस्त्रों की चमक, उनके गर्जन और शस्त्रों की वर्षा से सेना का मुख भी बड़ा विकट भयंकर प्रतीत होता है। कवचधारी वीर का ही स्वरूप मेघ समान होता है। (वर्मणः सः महिमा) कवच का यही बड़ा गुण है कि शरीर पर एक भी घाव न लग सके' से लोहे और उससे बनने वाले अस्त्र-शस्त्र या और भी डिजाइन पर गहन चर्चा है जबकि इससे आगे के मंत्रों में धनुष और उस पर लगे डोरी के माध्यम से भी गहरी बात की गई है। इन मंत्रों में कवच, तूणीर, तरकस के होने पर बड़ी ही गहराई से, गहनता के साथ बात करी गयी है तो उसके डिजाइन पर और कितना किया गया होगा सोचा जा सकता है। लोहे से तमाम प्रकार के निर्मिति के साथ ही लोहे को गलाने हेतु धौंकनी का भी जिक्र मिलता है।

यजुर्वेद के उन्नीसवें अध्याय के 58वें मंत्र में राष्ट्र के भिन्न-भिन्न अधिकारियों के अधीन नियुक्त पुरुषों के भिन्न-भिन्न लक्षण दर्शाए गए हैं, जहाँ उनके पदों और कार्यों को देखते हुए कृष्ण, श्वेत, (बभ्रु) भुरे, लाल केसरिया, चितकबरे सहित और भी रंगों के वस्त्र पहनने की बात हुई है मतलब रंगों का भी बढ़िया चलन था या रंगों के विशेषताओं के अनुरूप उनके प्रयोग का भी ज्ञान था। दुंदुभी पर ध्वज की बात भी है, ध्वज है तो ध्वज पर निशान या कुछ चित्र भी होगा। चित्र की उत्पत्ति का जिक्र बार-बार न करके हम बस संकेतों से बात करते चलेंगे। कुछ ऐसा ही जिक्र यजुर्वेद के 30 वें अध्याय के 5वें, छठे मंत्र में भी है। छठे मंत्र -

'नृत्ताय सूतं गीताय शैलूषं धर्माय सभाचरं नरिष्ठायै भीमलं नर्माय रेभ (गुंघवा)

हसाय कारिमानन्दाय स्त्रीपखं प्रमदे कुमारी पुत्रं मेधायै रथकारं धैर्य्याय तक्षाणम्'।। यजु./30/06।।

में (नृत्ताय) नाट्य के लिए (सूतम्) दूसरों से प्रेरित होने वाले, दूसरों को प्रभावित करने वाले, (गीताय शैलूषम्) गीत कर्म के लिए नाना भाव को दर्शाने वाले नट के साथ ही धर्म, राजनीति, कथा के लिए उपयुक्त व्यक्ति की बात की गई है। इसी मंत्र में हास्य के लिए नकल में निपुण के नियुक्ति की बात है। (मेधाय) बुद्धि के कार्य हेतु रथकार को वरीयता दिया गया है। रथकार नाना कौशल से रथ के नाना प्रकार के अवयवों को जिस बुद्धिमत्ता से लगाता है, सही जगह संयोजित करता है, उसी बुद्धि के बल पर विशेष कार्य योजना हेतु रथकार शिल्पी का अनुकरण करना चाहिए, रथकार के संयोजन शक्ति भविष्य के शिल्पकारों का वर्तमान था। जबकि (धैर्याय) धैर्य की शिक्षा के लिए (तक्षाणम्) तरखान को दृष्टान्त के रूप से जानों। जिस प्रकार श्रम से तरखान अपने छोटे से छोटे औजार से बड़ी धीरता, गंभीरता से अपने हाथ पाँव को बचाते हुए लकड़ी को गढ़ कर उत्तम कृतियों को सृजित करता है, जीवंत बना देता है उसी प्रकार हमें धीरता के साथ अपने कार्यों को करना चाहिए।

इसके आगे के मंत्रों में कुम्हार, पकी मिट्टी, लोहकार, मणिकार, नाई, (इषुकारम्- बाण बनाने वाले), रज्जुसर्जम- लम्बी रस्सी बनाने वालों का भी जिक्र है मसलन कहा जा सकता है कि आज के कलाकृतियों से तुलना करने पर भी हम वैदिक युग के कृतियों को पीछे नहीं पायेंगे। कला के क्षेत्र में इतनी परिपक्वता अचंभित करती है पर सच्चाई से मुंह भी तो नहीं मोड़ा जा सकता। हम कितनी भी यात्रा कर लिए हों पर सच्चाई यह है कि वो यात्रा वृत्तकार है और हम कुछ बदले हुए विचारों, रूपों या सर्वज्ञाता होने के दंभ के साथ आगे बढ़ रहे हैं, खामियाजा अच्छे कृतियों से बहुत दूर हो जाना होता है। कुल्हाड़ी से काष्ठों को काटकर भीत, खम्भे सहित और भी वस्तुओं के

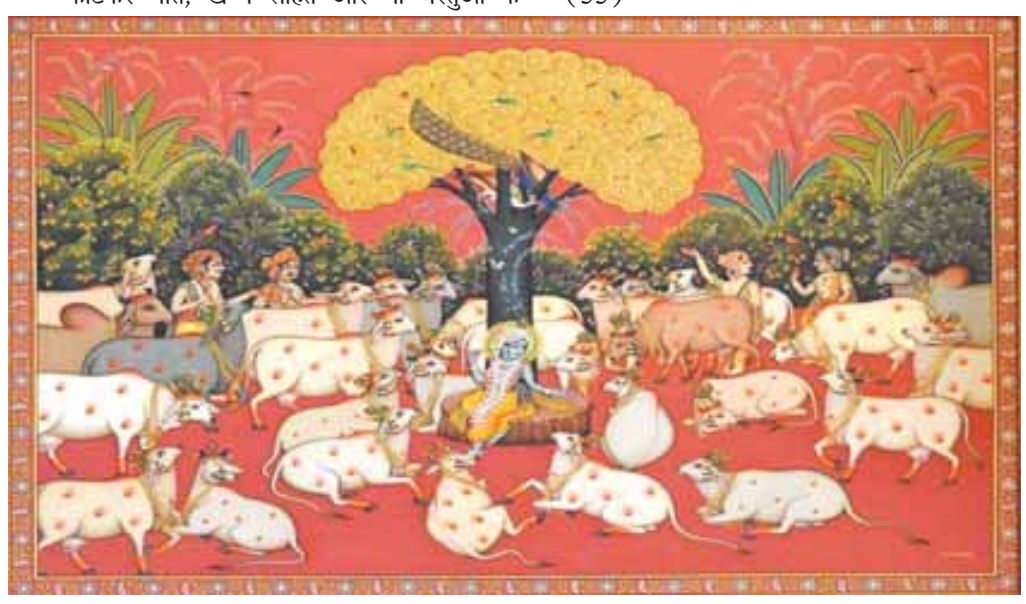

निर्माण का भी जिक्र मिलता है-

आ नो नावा मतीनां यातं पाराय गन्तवे।

युंजाथामश्विना रथम्।। (ऋ 01/46/07, देवता- अश्विनी कुमार)

हे अश्विनी कुमारों स्तुतियों रुपी सागर के पार जाने के लिए तुम नौका बनकर आओ एवं धरती पर आने के लिए अपने रथ में घोड़े को जोड़ो। (ऋ 01/46/07)

रथ के साथ ही काष्ठ और नावों का भी जिक्र वेदों में मिलता है। काष्ठ, बसुली, परकोटे का जिक्र मतलब काष्ठ शिल्प को बल मिलता है। बढ़ई, त्वष्टा, विश्वकर्मा के भी प्रमाण मिलते हैं। यजुर्वेद में 35 वें अध्याय के 8वें मंत्र में ईंटों से बने भवनों की भी चर्चा हुई है जबकि 15हवे में परकोटे की बात आई है वहीं यजुर्वेद के ग्यारहवें अध्याय के 55, 56 वें मंत्र में (देवता, विषय सिनीवाली, अदिति आदि) के बहाने मिट्टी के बर्तनों की बात भी बृहद रूप से की गई है।

स ... सृष्टां वसुभी रुद्रैधौरैन्- कर्मण्यां मृदम्।

हस्ताभ्यां मृद्वीं कृत्वा सिनीवाली कृणोतु ताम्।। (55)

जिस प्रकार (हस्ताभ्याम्) हाथों से (मृदम्) मिट्टी को (मृद्वीं कृत्वा) कोमल करके, सान करके शिल्पी उसको (कर्मण्या करोति) घड़ा, मटका आदि वस्तुओं को बना लेता है(55) या

सीनीवाली सुकपर्दा सुकुरीरा स्वौपशा।

सा तुभ्यमदिते मह्योखां दधातु हस्तयो।। (56)

मंत्र में (सुकपर्दा) उत्तम केश वाली, (सुकुरीरा) उत्तम आभूषण वाली (56) आदि का जिक्र भी आश्चर्य में डाल देता है। साथ ही ऋग्वेद के पहले मण्डल में (देवता- मरुद्गण)

चित्रैरञ्जिभिर्वपुषे पव्यफ्जते वक्षःसु रुक्माँ अधि येतिरे शुभे।

अंसेष्वेषां नि मिमृक्षुरृष्टयः साकं जज्ञिरे स्वधया दिवो नरः।। (ऋ 01/64/04)

मरुद्गण के शोभा के लिए अपने शरीर को भांति-भांति के आभूषणों से विभूषित करने, सीने पर सुंदर हार, बैज पहनने, हाथों में आयुध धारण करने के सुंदर दृश्य प्रस्तुत हुए हैं। इसी मंडल में आगे-

अरं कृण्वन्तु वेदिं समग्निमिन्धतां पुरः।

तत्रामृतस्य चेतनं यज्ञं ते तनवावहै।। (ऋ 01/170/04) में

हे ऋत्विजो! तुम वेदी को अलंकृत करो, उत्तम रीति से उसका निर्माण करो जैसे शब्दों से इंस्टालेशन की भी छाप स्पष्ट नजर आती है।

रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय।

इन्द्रो मायाभिः पूरुरूप ईयते युक्ता हास्य हरयः सता दश।। (ऋग्वेद 6/47/18) में

इंद्र के माया और उनके विभिन्न रूप धारण करने की बात हुई है मसलन मेकप जैसे माध्यम उस समय भी थे इस बात को झुठलाया नहीं जा सकता। इनका एक रूप अन्य देवों के दर्शन के लिए भी होता है।

वि तन्वते धियो अम्मा अंपासि वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति।

उपप्रक्षे वृषणो मोदमाना दिवस्पथा वध्यो यन्त्यच्छ।।

(ऋ-05/47/06)

में माताओं द्वारा अपने पुत्रों को पहनाने हेतु वस्त्रों के एक-एक तंतु करके बुनने की बात भी हैं। बुनाई कला का इससे अच्छा प्रमाण और क्या हो सकता है? गृहनिर्माण, वास्तु विन्यास आदि के जिक्र हेतु अथर्ववेद (9/3, 3/12/2) में शाला सूक्त के विवेचना की भी आवश्यकता है। हमारे वेदों में इतनी कलाओं का जिक्र है कि ब्रह्मण, आरण्यक, उपनिषद के अध्ययन के पहले ही तमाम चीजों का अनावरण हो जाए जिसके लिए अभी और बहोत अध्ययन की आवश्यकता है अभी तो कुछ भी अध्ययन नहीं हो सका। प्रस्तुत आलेख में जो भी बातें कही गई हैं इसमें अभी समय के साथ और बहुत सी चीजें जुड़ने की पूरी उम्मीद है और बहुत-बहुत कुछ से पर्दा हटने की भी। चित्र साभार गूगल से है।

'रिवाइल्डिंग सेंटर' की संरचना और इतिहास

कान्हा में अनोखा प्रयोग- 2

सैयद आसिम अली

पार्क प्रशासन ने घासभूमियों का पुनर्निर्माण किया, जलस्रोतों का संरक्षण किया और प्राकृतिक शिकार-शिकारी संबंध को संतुलित किया। यह केवल एक प्रजाति का पुनर्जीवन नहीं, बल्कि पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करने का प्रयास था। Rewilding प्रयोग ने यह भी सिद्ध किया कि मानव और वन्यजीव सहअस्तित्व संभव है। स्थानीय ग्रामवासियों को संरक्षण गतिविधियों में भागीदार बनाकर उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया गया। इसने संरक्षण को केवल सरकारी प्रयास न रहकर सामुदायिक आंदोलन बना दिया। आज कान्हा मॉडल को विश्वभर में एक सफल संरक्षण पद्धति के रूप में देखा जाता है। यह प्रयोग इस बात का उदाहरण है कि यदि वैज्ञानिक दृष्टि, दीर्घकालिक योजना और सामुदायिक सहयोग साथ आएँ, तो प्रकृति स्वयं को पुनर्जीवित करने की क्षमता रखती है।

यह प्रशिक्षण केंद्र 2007 में स्थापित किया गया था, और तब से अब तक लगातार कई शावकों को जंगल में फिर से शामिल करने में सफलता मिली है। केंद्र में तीन प्रमुख एन्क्लोजर (खंड) हैं-

एक 8 एकड़ का एन्क्लोजर जिसमें 20-30 माह आयु वर्ग के बाघ शामिल होते हैं जो हिरणों का शिकार कर रहे हैं। एक छोटा बाड़ा जिसमें 3-4 माह के शावक भोजन (दूध, अंडा, मैश्ड मांस) के साथ प्रशिक्षण पाते हैं।

प्रशिक्षण के लक्ष्य

शुरुआती चरण में शावकों को धीरे-धीरे कड़ी खाद्य श्रृंखला (दूध से शुरुआत, फिर मुर्गा और बाद में हिरण, बकरियाँ) से परिचित कराया जाता है।लगभग एक वर्ष पश्चात ये शावक एक 'कैर्निवोर-प्रूफ' बाड़े में गिराए जाते हैं, जहां वे स्वतंत्र रूप से शिकार करना सीखते हैं।यदि कोई शावक 4-5 दिनों में एक हिरण शिकार कर लेता है, तो इसे प्रशिक्षण पूरा मान लिया जाता है। कान्हा के हार्ड-ग्राउंड बारासिंगा (Swamp Deer) एक समय विलुप्त होने की स्थिति में पहुँच गए थे। वैज्ञानिक प्रबंधन, वनभूमि पुनर्जीवन और स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी से इनकी संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। पार्क प्रशासन ने घासभूमियों का पुनर्निर्माण किया, जलस्रोतों का संरक्षण किया और प्राकृतिक शिकार-शिकारी संबंध को संतुलित किया। यह केवल एक प्रजाति का पुनर्जीवन नहीं, बल्कि पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को पुनर्जीवित करने का प्रयास था। Rewilding प्रयोग ने यह भी सिद्ध किया कि मानव और वन्यजीव सहअस्तित्व संभव है। स्थानीय ग्रामवासियों को संरक्षण गतिविधियों में भागीदार बनाकर उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया गया। इसने संरक्षण को केवल सरकारी प्रयास न रहकर सामुदायिक आंदोलन बना दिया। आज कान्हा मॉडल को विश्वभर में एक सफल संरक्षण पद्धति के रूप में देखा जाता है। यह प्रयोग इस बात का उदाहरण है कि यदि वैज्ञानिक दृष्टि, दीर्घकालिक योजना और सामुदायिक सहयोग साथ आएँ, तो प्रकृति स्वयं को पुनर्जीवित करने की क्षमता रखती है। कान्हा नेशनल पार्क (मध्य प्रदेश) को 'टाइगर रिज़र्व' और 'कठोर वन्यजीव प्रबंधन' के उदाहरण के रूप में जाना जाता है। यहाँ किया गया rewilding प्रयोग (विशेष रूप से बारासिंगा यानी Swamp Deer को बचाने और उनके प्राकृतिक आवास को पुनर्जीवित करने के प्रयास) वास्तव में वैश्विक स्तर पर सराहनीय है। बारासिंगा संरक्षणः कान्हा ही वह स्थान है जहाँ 'हार्ड ग्राउंड बारासिंगा' की अंतिम बची हुई आबादी पाई जाती थी। सक्रिय संरक्षण व rewilding के कारण आज उनकी संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। आवास पुनर्निर्माणः घासभूमियों (grasslands) को पुनर्जीवित कर, प्राकृतिक शिकार व शिकारी (predator-prey balance) को संतुलित किया गया। स्थानीय समुदायों को भी संरक्षण प्रक्रिया मंल शामिल कर सहभागी संरक्षण मॉडल विकसित किया गया।

कान्हा का यह प्रयोग दिखाता है कि यदि वैज्ञानिक प्रबंधन, स्थानीय सहयोग और दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाया जाए तो विलुप्ति की कगार पर पहुँची प्रजातियों को भी बचाया जा सकता है। यह प्रयोग न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व को यह संदेश देता है कि rewilding प्रकृति और मानव के बीच सामंजस्य की दिशा में एक व्यवहार्य व सफल रणनीति हो सकती है। घोरेला री-वाइल्डिंग सेंटर (मुक्की रेंज, कान्हा टाइगर रिज़र्व) से संबंधित जानकारी बाड़े या पिंजरे कैसे बनाए गए हैं और प्रशिक्षण कैसे दिया जाता है, इसके बारे कुछ बातें हम आपको बताते है मुक्की रेंज, कान्हा टाइगर रिज़र्व में पारंपरिक हिरण आवास क्षेत्र के भीतर एक विशेष रूप से निर्मित बाड़ा बनाया गया है, जिसे इन-सीटू (प्राकृतिक स्थल पर) कहा जाता है। इस बाड़े में स्थानीय जलाशय, वन, घासभूमि और खनन क्षेत्र शामिल हैं, जो लगभग 1 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला है। इस आंतरिक क्षेत्र का उपयोग बछड़ों के पालन-पोषण और पोषण के लिए किया जाता है। इस बाड़े के चारों ओर 35 हेक्टेयर का शाकाहारी प्राणी बाड़ा बनाया गया है, जो बाघों को प्राकृतिक शिकार आधार (शिकार प्रजातियाँ) उपलब्ध कराता है। 11 हेक्टेयर के बाघ बाड़े को 3.7 मीटर ऊँची मजबूत चेन-लिंक बाड़ से पूरी तरह घेर दिया गया है। इस 11 हेक्टेयर क्षेत्र को इसी प्रकार की बाड़ से दो हिस्सों में विभाजित किया गया है, ताकि आवश्यकता पड़ने पर बछड़ों को अलग-अलग रखा जा सके। निगरानी हेतु इस बाड़े के चारों ओर चार वॉच टॉवर बनाए गए हैं, साथ ही दो द्वार भी हैं, जिनसे प्रशिक्षित हाथी और विभागीय वाहन अंदर प्रवेश कर निगरानी कार्य में सहयोग कर सकते हैं। 35 हेक्टेयर के शाकाहारी प्राणी बाड़े को भी 2.5 मीटर ऊँची मजबूत चेन-लिंक बाड़ से घेरा गया है। इसका मुख्य उद्देश्य चीतल (हिरण) जैसे शाकाहारी जीवों को सुरक्षित रखना है, जिन्हें आसपास की घासभूमि और मैदानों से नियमित रूप से छोड़ा जाता है। यह बाड़ा बछड़ों के लिए आवश्यकतानुसार शिकार उपलब्ध कराता है।

इसके अतिरिक्त, मुख्य बाड़े के पास एक छोटा क्वारंटीन हाउस (अलग आश्रय) भी बनाया गया है। इस क्वारंटीन हाउस का उपयोग 3 महीने से 1 वर्ष की आयु के बाघ के शावकों के पालन हेतु किया जाता है। जब शावकों में पर्याप्त शारीरिक शक्ति और शिकार करने की क्षमता विकसित हो जाती है, तो उन्हें क्वारंटीन हाउस से 11 हेक्टेयर बड़े बाड़े में स्थानांतरित कर दिया जाता है। इस क्वारंटीन हाउस में भी दो अलग-अलग बाड़े हैं, ताकि दो बाघों का एक साथ पालन किया जा सके। आवश्यकता अनुसार इसमें नियमित रूप से प्राकृतिक घास और हरा चारा उपलब्ध कराया जाता है। बाड़े की पूरी घेराबंदी को स्थानीय घास की परतों से ढककर अपारदर्शी बना दिया गया है, ताकि बाघों को शांति और एकांत प्रदान किया जा सके। बाड़े में तैनात कर्मचारी बाघों की सभी गतिविधियों का एक रजिस्टर में लेखा-जोखा रखते हैं। इसमें शिकार, शिकार-आधार की आपूर्ति, पशु चिकित्सक द्वारा नियमित जांच, अन्य कर्मचारी और अधिकारियों द्वारा निगरानी, तथा शिकार की खपत जैसी जानकारियाँ निर्धारित प्रारूप में दर्ज की जाती हैं।बाड़े से 500 मीटर की दूरी पर एक नियंत्रण कक्ष भी स्थापित किया गया है, ताकि जानवरों की प्रभावी ढंग से निगरानी की जा सके।सभी एन्क्लोजरों में सीसीटीवी कैमरे लगे होते हैं, ताकि मानवीय हस्तक्षेप न्यूनतम रहे।

घोरेला री-वाइल्डिंग सेंटर (मुक्की रेंज, कान्हा टाइगर रिज़र्व) मॉडल की सफलता इस मॉडल से अब तक कई बाघों को सफलतापूर्वक जंगल में रिहा किया जा चुका है। इसे मिशाल बनाकर 'घोरेला मॉडल' के नाम से जाना जाता है। WTCA (राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण) ने घोरेला मॉडल को अपनाया है, और इस री-वाइल्डिंग पद्धति को अब अन्य संरक्षण योजनाओं में भी अनुकरणीय मॉडल माना जाता है। घोरेला री-वाइल्डिंग सेंटर कान्हा की वन्यजीव संरक्षण रणनीति में एक मिसाल बन चुका है। यहां विकसित अनुसंधान और प्रशिक्षण मॉडल ने बाघों को मुक्त जीवन की तैयारी कराने में मील का पत्थर साबित किया है। न केवल यह प्रयास स्थायी संरक्षण के लिए असरदार सिद्ध हुआ है, बल्कि इसने मध्य प्रदेश और भारत में अन्य रिज़र्वों की आबादी रणनीतियों को भी मजबूत किया है। उदाहरण के लिए, 2007 से अब तक बाघों को पन्ना, नौरादेही, सतपुड़ा और संजय टाइगर रिज़र्व, रातापानी नेशनल पार्क में पुनर्स्थापित किया गया है। फील्ड डायरेक्टर कान्हा टाइगर रिज़र्व के अनुसार, अब तक 10 बाघों को इसी प्रक्रिया में सफलतापूर्वक रिवाइल्ड किया गया है। (समाप्त)

रजनीकान्त है, बस इतना ही काफी है

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे,

लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

अपने प्रशंसकों में - 'थलाइवा' के नाम से पहचाने जाने वाले रजनीकान्त की जबर्दस्त लोकप्रियता आज भी बरकरार है और इसका इससे बढ़कर प्रमाण क्या होगा कि सुबह साढ़े सात बजे के मार्निंग शो में भी थियेटर हाउसफुल होते हैं। लोकेश कविराज के निर्देशन में बनी फिल्म -

'कुली' में भी रजनीकान्त अपने चिरपरिचित अन्दाज़ में नज़र आये। अपने खास अंदाज़ में सिगरेट को उंगलियों से उछालकर होंठों में भींच लेने वाला करतब हो अथवा लहराते हुए एक्शन सीन में दुश्मनों

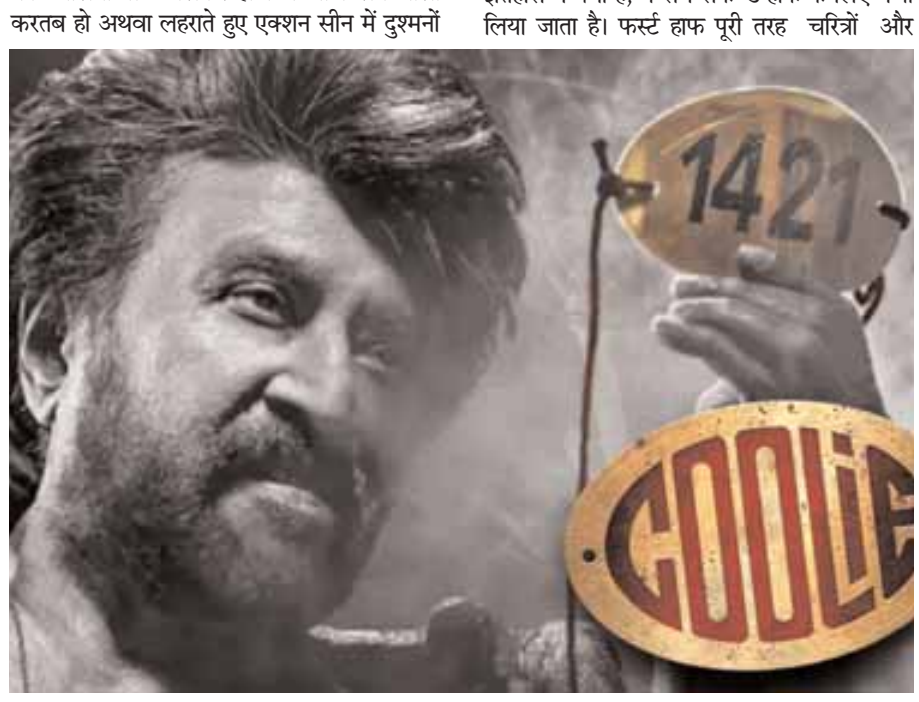

को ढेर करने की कला, रजनीकान्त बस रजनीकान्त है । अपनी अभिनय क्षमता और निराले अन्दाज़ के बूते वे आज़ भी सबसे अलग है । इस सबके चलते यदि हम यह कहें कि फिल्म कुली में रजनीकान्त है बस इतना ही काफी है ।

फिल्म में रजनीकान्त के साथ-साथ नागार्जुन और सोबिन शाइर के रूप में एक्शन का तड़का भी है और मेहमान कलाकार के रुप में आमिर खान की मौजूदगी किसी बोनस से कम नहीं है ।कहानी एक व्यस्त बंदरगाह से शुरु होती है जहाँ तस्करी का जबर्दस्त कारोबार है। इस सारे कारोबार के पीछे एक खतरनाक और चालाक अपराधी है - साइमन (नागार्जुन), जिसके लिए उसका विश्वस्त लेकिन निर्मम आदमी दयाल (सोबिन शाहिर) काम करता है। साइमन का बेटा अर्जुन (कन्ना रवि) अपने पिता के इस गैरकानूनी धन्धे से नफरत करता है और एक ईमानदार कस्टम अफसर का कैरियर चुनता है।अपराध की इस दुनिया से दूर देवा (रजनीकांत) एक पुरानी हवेली जैसे बोर्डिंग हाउस का मालिक है। एक दिन देवा को खबर मिलती है कि उसके तीस साल पुराने जिगरी दोस्त राजशेखर (सत्य) की अचानक मौत हो गई। दोस्ती का फर्ज निभाते हुए वह राजशेखर की बेटियों प्रीति (श्रुति हासन) और उसकी दो बहनों की जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेना चाहता है। लेकिन जल्द ही सच सामने आता है कि राजशेखर की मौत दिल के दौरे से नहीं, बल्कि सीने पर वार करके हत्या से हुई है।

देवा जब जाँच शुरू करता है, तो पता चलता है कि राजशेखर ने एक खतरनाक आविष्कार किया था, इलेक्ट्रिक चेयर वाला चेंबर, जो किसी भी लाश को मिनटों में राख में बदल सकता था। सरकार ने इसे खतरनाक मानकर बैन कर दिया था, लेकिन दयाल ने धमकी और दबाव से राजशेखर को मजबूर किया। वह इस मशीन का गैरकानूनी इस्तेमाल कर दुश्मनों का सफाया करना चाहता है। इसके आगे जैसा कि ऐसी कहानियों में होता है पुलिस भी है?, षड्यंत्र भी, मुखबिर है और विलेन की क्वरूता भी।

कुली फिल्म में देवा का क्या रहस्य है, उसके इतिहास में क्या है, ये सब सेकण्ड हाफ के लिए बचा लिया जाता है। फर्स्ट हाफ पूरी तरह चरित्रों और कहानी की बुनावट करता है। मलयालम स्टार सौबिन शाहिर की ऊर्जा और दमदार अभिनय पहले हिस्से की जान है। गैंग के 'किंगपिन' उर्फ हेड बने नागार्जुन, एक बिल्कुल नेगेटिव और नए अंदाज में स्क्रीन पर उभरते हैं।

फर्स्ट हाफ की जमावट के बाद, सेकण्ड हाफ में 'कुली' से बड़ी अपेक्षा थी लेकिन इस फिल्म के इस हिस्से में कुछ अस्त व्यस्तता रही और कहानी के सस्पेंस, ट्विस्ट और रहस्योद्घाटन उतने दमदार नहीं लगते हैं जितने होने चाहिए थे। लोकेश रहस्योद्घाटन के मामले में सिर्फ तमिल सिनेमा में ही नहीं, देशभर के युवा निर्देशकों में बहुत ऊपर गिने जाते हैं । उनकी पिछली फिल्म -'विक्रम' में तो सभी रहस्योद्घाटन विलक्षण थे मगर 'कुली' के सेकण्ड हाफ में शायद वो खुद रजनीकांत के जलवों को एन्जॉय करने में खो गये और पटकथा लड़खड़ा गई ।

जनीकान्त के कैरियर की पचासवीं वर्षगांठ के मौके पर लोकेश कविराज ने उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिये एक ऐसी फिल्म बनाई जो सुपरस्टार को और शीर्ष पर पहुँचा सकती है, ऐसा रजनीकान्त के प्रशंसकों का मानना है और लोकेश को सही साबित करती है ।

बुक-शेल्फ : द एवरेस्ट गर्ल

डॉ. सुधीर सक्सेना

संकल्प और जिजीविषा की जय-यात्रा

मनुष्य के साहसिक अभियानों पर जब-तब किताबें आती रहती हैं, लेकिन बहुत कम किताबें ऐसी होती हैं, जो उस संकल्प और जीवट को वर्णित कर सकें, जिनकी कोख से अभियान जनमता, उमगता और पूरा होता है। बीते साल एक किताब आई है 'द एवरेस्ट गर्ल'। कृतिकार हैं ब्रजेश राजपूत। आवरण पर बोल्ड शीर्षक के ऊपर थोड़े छोटे हरूफ़ में लिखा है : एक साधारण लड़की की असाधारण कहानी। यह साधारण लड़की कौन है, यह जानने के लिये आपको 170 पन्नों के उस कलेवर से गुजरना होगा, जिसे ब्रजेश ने अत्यंत मनोयोग से लिपिबद्ध किया है। यह साधारण लड़की है मेघा परमार। मध्यप्रदेश में सीहोर जिले में नामालूम से भोजनगर गांव में साधारण कृषक परिवार में जनमी मेघा, जिसने 22 मई, सन 2019 को विश्व के सर्वोच्च शैल-शिखर को फतह किया। मेघा मध्यप्रदेश की पहली पर्वतारोही है, जिसने माउंट एवरेस्ट को जीता। इस नाते वह एवरेस्ट गर्ल कहलाई। उसी की जिंदगी की सच्ची कहानी पर आधारित है यह किताब। यह किताब सही अर्थों में मेघा के अटूट संकल्प और अदम्य जिजीविषा की जय-यात्रा की गाथा है। ब्रजेश ने इसे औपन्यासिक शैली में प्रस्तुत किया है। बिला शक उनके पास वह कीमिया है, जिसके बूते वह सागरमाथा-कन्या के मनस में पैठते हैं और उसकी संवेदनाओं और अनुभूतियों से एकाकार होकर उन्हें बखूबी व्यक्त करते हैं।

किताब में चौदह अध्याय हैं और यह गाथा 'मैं वापस नहीं जाऊंगी' से शुरू होती है। मेघा अपने शेरपा निम्मा दाई से यह बात जब चीख कर कहती हैं, तब उसके और एवरेस्ट के दरम्यां फ़कत सात सौ मीटर का फासला था। शेरपा बईनी को समझाता है। उस बईनी को जिस पर एवरेस्ट विजय की ज़िद और जुनूं तारी है। इसके जरिये पाठकों में अबूझ जिज्ञासा जगाकर कथानक फ्लैश बैक में चला जाता है और पाठक स्वयं को मेरा गांव मेरा बचपन के बहाने भोजनगर में पाता है। बचपन और कैशोर्य की कहानी के बहाने हम गांव के परिवेश, मान्यताओं, वर्जनाओं, रूढ़ियों और रीति-रिवाज से परिचित होते हैं। इसमें पिता पर सूतक का भूत उतारने का दिलचस्प प्रसंग है। यह वह गांव है, जहां वीरांवाली होने से लड़कियों की शान बढ़ती है। जहां प्रेम का इजहार अच्छा नहीं माना जाता। जहां पाठशाला में छात्र-छात्राएं अलग-अलग, दूर-दूर बैठते हैं। जहां पुत्र और पुत्री के साथ सलूक में फर्क होता है। जहां कर्मकांड का बेतरह प्रचलन है। इस तरह लेखक बरबस अपने समय को दर्ज करता है। बहरहाल, एनएसएस से जुड़ाव से मेघा के सपनों को पंख लगते हैं। स्नेह सम्मेलन में प्राचार्य महोदया की पेशीनगोई अच्छी लगती है कि यह लड़की किसी दिन आकाश छुवेगी और बहुत ऊंचाई पर पहुंचेगी। गुवाहाटी और कानपुर की यात्राएं उसके मनस को बदल देती हैं। चैनल से जुड़ाव उसके संपर्कों के दायरे को विस्तार देता है।

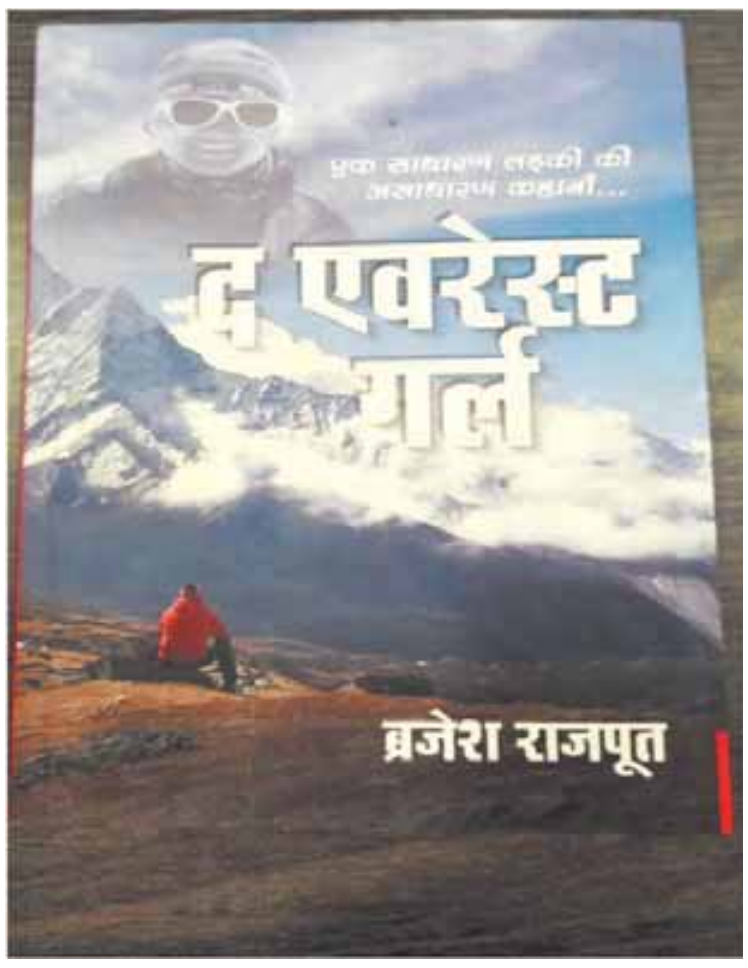

मेघा सपना देखती है। रोमांचक सपना, लेकिन उसकी पूर्ति आसान नहीं। राह में रोड़े ही रोड़े हैं। मेघा एकदा अखबार में प्रदेश के दो पर्वतारोहियों के चित्र देखती है, जो एवरेस्ट फतहकर लौटे थे। बस यह खबर उसकी दशा और दिशा बदल देती है। इसके बाद पर्वतारोहण का जुनूं होता है और जुनूं की गिरफ्त में मेघा। बेस कैंप की यात्रा का ब्यौरा पाठकों को लुकला, फाकदिंग, नाम्चे बाजार, थ्यांगबोचे, फेरिचे, लोबुचे और गोरक्शेप की दिलचस्प सैर कराता है। स्पांसरशिप के लिए वह पापड़ बेलती है, लेकिन युक्ति काम नहीं आती। बहरहाल, उसकी जद्दोजहद देखते ही बनती है। ऐसी हताशा में एसआर मोहंती जैसे संवेदनशील अफसर उसके प्रेरक संबल बनते हैं। वह मनाली में पर्वतारोहण का प्रशिक्षण लेती है, लेकिन हादसे में उसकी मेरूदण्ड क्षतिग्रस्त हो जाती है। पढ़ना दिलचस्प है कि कैसे मेघा हादसे की पीड़ा और खंडित मनोबल से उबरती है। शिखर के पास से वापसी के बाद वह जिस मनःस्थिति से गुजरती और फिर मनोबल बटोरती है, उसका चित्रण गौरतलब है। एकबारगी वह खुदकुशी को भी अग्रसर होती है। कुणाल और दिल्ली में अपरिचित आटोचालक के प्रसंग मार्मिक हैं। ऐसा ही वह प्रसंग मर्मस्पर्शी है, जब मेघा अपने और एवरेस्ट के बीच आ रहे केशों को कटा लेती है और तमाम फोन नंबरों को डिलीट करती है। उपन्यास का ग्यारहवां और बारहवां अध्याय पठनीय है कि वह दमखम बढ़ाने के कठोर अभ्यास और फिर एवरेस्ट की ओर के प्रसंगों को समेटती है। आखिरी अध्यायों के कई प्रसंग लोमहर्षक हैं। प्रसाद सर का चरित्र आकर्षक है। लेखक चीजों को ब्यौरों के बजाय बारीकियों में पकड़ता है। एक जगह नायिका कहती है, 'मैं घोड़े नहीं, याक बेचकर सोती रही।' यह लोकेल (स्थान) की गहरी पकड़ दर्शाता है। ऐसे ही 'पहाड़ आदमी को सख्त बनाते हैं' जैसे कथन की व्यंजना बड़ी है। किताब में बतौर मोरेल-बूस्टर 'माझी : द माउंटेन मैन' और 'चक दे इंडिया का भी जिक्र है। किताब की खूबसूरती कि लेखक पाठक को पहाड़ की चढ़ाई पर 8848 मीटर ऊंचे तिकाने ठौर यानि समिट पिरामिड तक साथ लेकर चलता है और पाठक को विजेता के एहसास से सराबोर कर देता है। न तो उसकी शैली गूढ़ है और न ही भाषा क्लिष्ट या अलंकृत। वह सरल-सहज और बोधगम्य है। ब्रजेश कथानक को प्रामाणिकता और विश्वसनीयता प्रदान करने में कामयाब रहे हैं। ब्रजेश श्रव्य-दृश्य, माध्यम में महारत के लिए जाने जाते हैं, किंतु यह कृति उनकी पत्रकारीय यात्रा में मुद्रित माध्यम के सुदृढ़ देहरी होने की तस्दीक करती है। ब्रजेश ने यह सत्य-उपन्यास प्रथम-पुरूष में लिखा है। एक तरह से यह परकाया प्रवेश का उदाहरण है। शायद मेघा भी अपनी आपबीती को इतनी साफगोई, बेबाकी और दक्षता से नहीं लिख पातीं। बिला शक फ्लैप पर ब्रजेश का यह परिचय भ्रामक और अपूर्ण है कि वह टेलीविजन-पत्रकार हैं। दरअसल, 'द एवरेस्ट गर्ल' उनकी किस्सागोई को बखूबी उजागर और स्थापित करती है और साधुवाद की पात्रता देती है।

जहाँ मृदुभाव या नम्रता नहीं है वहां धर्म भी नहीं है : मुनिश्री विभंजन सागर जी

धार। दिगंबर जैन समाज में दस लक्षण पर्व चल रहे हैं मुनिश्री विभंजन सागर जी मुनिराज ससंघ के पावन सानिध्य में इंदौर से आए पंडित भरत जी शास्त्री एवं सहयोगी विमल जी जैन पंडित जी विधानाचार्य के द्वारा समोसरण विधान का आयोजन कर आराधना कर रहे है पर्युषण पर्व के दूसरे दिन उत्तम मार्दव धर्म के रूप में मनाया । श्री जी की शांति धारा करने का सौभाग्य नरेश कुमार जी श्रेणिक कुमार जी गंगवाल और डॉक्टर अनिलजी आंशिक गंगवाल को प्राप्त हुआ ।

अभिषेक के दौरान रत्नों वृष्टि की जा रही है। रत्न वृष्टि 10 दिन तक की जाएगी। विधान में बैठने वाले सभी धर्म बंधुओं को रतन दिया गया । रत्न दान दाता मयंक,प्रदीपजी जुगमंदर जी छाबड़ा परिवार है। दीप प्रज्जवलन, गुरुदेव को शास्त्र भेंट और पाद प्रक्षालन का सौभाग्य जयपुर से आए अतिथि श्री धर्मचंद जी जैन को मिला।

99 पर्युषण पर्व का दूसरा दिन उत्तम मार्दव धर्म के रूप में मनाया- तत्पश्चात गुरुदेव की दिव्य देशना मार्दव धर्म पर देते हुवे बताया कि मार्दव धर्म आत्मा अर्थात् निजात्मा स्व-स्वरूप का धर्म है। जहाँ मृदु भाव या नम्रता नहीं है वहाँ धर्म भी नहीं है। और वहाँ नियम, व्रत, तप, दान, पूजा इत्यादि जो मानव करता है विनय भाव के बिना व्यर्थ है।

व्यक्ति को अहंकार नहीं करना चाहिए।

दान देकर भूल जाना चाहिए। दान बोला है तो देना है दान दिया है तो भूल जाना है हर व्यक्ति को दो बात जरूर से याद रखना चाहिए एक तो अपना अतीत अपना व्यक्तित्व और दूसरा मृत्यु जो निश्चित है। उत्तम मार्दव धर्म में अहंकार का त्याग, विनय का भाव होना चाहिए! गुरुदेव की प्रवचन शैली इतनी बढ़िया है कि सारे श्रोता मंत्र मुग्ध हो जाते है । सुनने के बाद

विचारों में परिवर्तन आता है!- यह पर्व 10 दिन का होता है अनंत चतुर्दशी का दिन अंतिम दिन रहता है तत्पश्चात जैन धर्म में क्षमावाणी होती है जिसमें वर्ष भर में हमसे जाने अनजाने कोई भूल हुई हो गलती हुई हो एक दूसरे से क्षमा मांग कर मन में जो द्वेष है उसको दूर करते हैं। समाज के अध्यक्ष श्रेणिकजी गंगवाल ने बताया कि कल पर्यूषण के प्रथम दिन संध्या में संध्याकालीन आरती, इंदौर से आए पंडित जी भरत जी जैन द्वारा जिनवाणी स्वाध्याय हुआ, तत्पश्चात बहुत ही शानदार धार्मिक अंताक्षरी कार्यक्रम ब्रह्मचारिणी प्रगति दीदी के द्वारा हुआ। कार्यक्रम में सहयोग मौसम झांझरी और श्रेयांश गंगवाल द्वारा दिया गया। प्रतियोगिता में विजय हुए प्रथम और द्वितीय ग्रुप को पुरस्कार दिया। जानकारी संजय गंगवाल मीडिया प्रभारी द्वारा दी गई । संचालन संजय छाबड़ा ने किया।

जर्जर हालत में पहुंचा ग्राम पंचायत कुही का पंचायत भवन

40 साल पुराने भवन की छत से झड़ रहा प्लास्टर, टपक रहा पानी

बैतूल। विकासखंड घोड़ाडोंगरी के अंतर्गत ग्राम पंचायत कुही में लगभग चालीस साल पुराना पंचायत भवन अपनी आयु पूरी कर, जगह-जगह से जर्जर हो गया है। जो कभी भी हादसे का कारण बन सकता है। दरअसल वर्तमान में पंचायत भवन की स्थिति काफी जर्जर हैं। पूरे भवन की छत से प्लास्टर भर-भराकर गिर रहा है। लेंटर की लोहे की छड़ सड़ रही है और दीवारों से सीमेंट छोडने का क्रम बना हुआ हैं। तीन कमरों के इस भवन में एक भी कमरा कार्यालय में बैठने लायक नहीं है। दीवार की दरारों से वर्षा का पानी भवन के अंदर आ रहा है। जिससे पंचायत के रिकॉर्ड भी कार्यालय में नहीं रख सकते। ऐसे में यहां काम करने वाले कर्मचारियों के साथ-साथ आमजनता को भी हादसे का डर सता रहा है। इसके बावजूद पंचायत कमर्मी जान जोखिम में डाल कर नौकरी करने विवश हैं। जिम्मेदारों सहित ग्रामीणों को सबसे अधिक मुसीबत का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों के अनुसार इस भवन का निर्माण 1985 में कराया गया था। अब पंचायत भवन जीर्णोद्धार की स्थिति में है।

यहां आने वाले रहते हैं चिंतित- पंचायत भवन की दुर्दशा को देखकर काम के दौरान कर्मचारी भयभीत रहते हैं। यही हाल गांव की आमजनता का भी हैं। काम के दौरान विभागीय लोगों के साथ-साथ गांव के लोग भी चिंतित रहते हैं। ग्रामीणों की मानें तो सबसे अधिक परेशानी का सामना वर्षा के दिनों में करना पड़ता है। जब वर्षा होती है तो पूरा छत टपकता है। सिर छुपाने की जगह नहीं बचती। जर्जर हाल भवन पर सामान्य वर्षा पर भी पानी टपकने लगता है। छतों से पानी टपकने व भवन के फर्श पर इसके जमा होने पर कामकाज को लेकर कर्मचारियों एवं ग्रामीणों को परेशानी उठाना पड़ रहा हैं। गांव के अंदर अन्य कोई सरकारी भवन नहीं होने के कारण खतरें के बीच कार्यालय लगाया जा रहा हैं।

कई सालों से कर रहे भवन निर्माण की मांग - पंचायत कार्यालय भवन की दुर्दशा कर्मचारियों के साथ-साथ ग्रामीणों में भी डर का माहौल है। ग्राम के उपसरपंच कमलेश झल्लारे ने बताया कि कुही ग्राम पंचायत भवन जर्जर हालत में है। कई सालों ने नए भवन बनाने की अधिकारियो और जनप्रतिनिधियों से गुहार लगा रहे है। यहां काम करने वाले कर्मचारियों की मानें तो भवन के अंदर सबसे खराब स्थिति रिकार्ड रूम की है, यहां कम समय की वर्षा में भी छत रिसने लगता हैं। ग्रामीण चंदरू धुर्वे का कहना हैं कि पंचायत भवन कई वर्षों पुराना है। इसकी छत से इतना पानी टपकता हैं कि रुम के अंदर खड़े नहीं रह सकते। प्लास्टर गिरने की समस्या केवल एक रूम में नहीं हैं, बल्कि सभी रूम की एक जैसी स्थिति है।

आबादी और क्षेत्रफल की दृष्टि से बड़ी पंचायत - ग्राम सरपंच बारेलाल वट्टी का कहना हैं कुही पंचायत आबादी और क्षेत्रफल की दृष्टि से बडी पंचायत है। इस लिहाज से कार्यालय आने जाने वालों की संख्या अधिक रहती हैं। प्रतिदिन दर्जनों ग्रामीणों का किसान मजदूर, विद्यार्थी और ग्रामीण लोग काम से आते है। ऐसे स्थिति में यदि जर्जर भवन के कारण कोई अप्रिय घटना घट जाए तो कौन जिम्मेदार होगा? सभी ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से मांग की है कि पंचायत कार्यालय अन्य भवन के लिए नये भवन की स्वीकृति प्रदान की जावे। वैकल्पिक तौर पर अन्य शासकीय भवन ने शीघ्र ग्राम पंचायत कार्यलय लगाने की अनुमति प्रदान की जावे। प्रेम सिनोटिया ने बताया कि छत व दीवारों का प्लास्टर उखड़ रहा है। वर्षा में दीवारों में सीलन हो जाती है। पंचायत भवन कभी भी धराशाही हो सकता है।

इनका कहना है

ग्राम पंचायत कुही का भवन कभी जर्जर हालत में है। वही किराए से अन्य जगह ग्राम पंचायत कार्यालय संचालित करने की अनुमति नहीं मिलती है। नवीन बिल्डिंग निर्माण के लिए ग्राम पंचायत ने पूर्व में कई प्रस्ताव पारित किए, लेकिन नई बिल्डिंग की राशि प्राप्त नहीं हुई। उच्च अधिकारियों को भी भवन की स्थिति के बारे में कई बार पत्राचार से अवगत किया जा चुका है।

- निर्भय यादव, सचिव, ग्राम पंचायत कुही

उमावि बिसनूर में मनाया राष्ट्रीय खेल दिवस

बैतूल। शासकीय उमावि बिसनूर में हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की जयंती राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाई गई। इस अवसर पर खेल एवं युवा कल्याण विभाग विकासखंड प्रभात पट्टन के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय खेल दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में विधायक प्रतिनिधि राजेश पाठक,

जनपद सदस्य प्रफुल्ल ठाकरे, सरपंच श्रीमती प्रियंका अतुल ठाकरे, पूर्व जनपद सदस्य नामदेव धोटे, वासुदेव धोटे, मंचित लोखंडे, संजू उप सरपंच वायगाँव व प्राचार्य आरके मालवीय ने खेलों के महत्व पर प्रकाश डाला व 29 अगस्त से 20 सितम्बर तक होने वाले सांसद खेल महोत्सव का फीता काटकर शुभारंभ किया। इस अवसर पर शासकीय व अशासकीय शालाओं के विद्यार्थी एवं शाला परिवार उपस्थित थे।

श्री सांवरिया सेठ मंदिर त्रिमूर्ति नगर धार में श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा का अमृत प्रवाह 31 अगस्त से

श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन स्वर्गीय श्री मुरली उपाध्याय मित्र मंडल के तत्वावधान में किया जा रहा है

धार। त्रिमूर्ति नगर स्थित श्री सांवरिया सेठ मंदिर पर दिनांक 31 अगस्त रविवार से श्रीमद् भागवत ज्ञान गंगा का अमृत प्रभाव बहने जा रहा है। आचार्य पंडित मनीष दुबे ओंकारेश्वर के श्रीमुख से प्रतिदिन दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक श्रीमद् भागवत कथा का वाचन होगा।

18 महापुराण समिति के अध्यक्ष एवं समिति प्रमुख स्वयं प्रकाश सोनी एवं अशोक मनोहर जोशी ने बताया कि श्री सांवरिया सेठ मंदिर त्रिमूर्ति नगर धार पर उक्त श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन स्वर्गीय श्री मुरली उपाध्याय मित्र मंडल के तत्वावधान में आयोजित किया जा रहा है। स्वर्गीय मुरली उपाध्याय धार गढ़ कालिका मंदिर के पुजारी होकर धार्मिक और सामाजिक कार्यकर्ता थे और अपने दोस्तों में सबसे प्रिय होकर अपने दोस्तों को हमेशा धार्मिक कार्यों से जोड़ते रहे हैं। उनकी पुण्य स्मृति में उक्त कथा का आयोजन सारे मित्र मंडल मिलकर कर रहे हैं।

18 महापुराण समिति के मीडिया प्रभारी अशोक शास्त्री ने बताया कि 31 अगस्त को श्री सांवरिया सेठ मंदिर त्रिमूर्ति नगर धार से प्रातः 9 बजे भव्य कलश यात्रा निकाली जाएगी तत्पश्चात दोपहर 2 बजे से 5 बजे तक कथा का शुभारंभ होगा कथा के दौरान शिव पार्वती विवाह, श्री कृष्ण जन्मोत्सव, श्री गोवर्धन पूजा और सुदामा चरित्र का विस्तृत वर्णन सुनने को मिलेगा। अनंत चतुर्दशी के दिन कथा का समापन होगा । स्वर्गीय मुरली उपाध्याय मित्र मंडल द्वारा उक्त कथा का लाइव प्रसारण भी विशाल स्टूडियो द्वारा करवाया जा रहा है। सांवरिया सेठ मंदिर के प्रमुख ट्रस्टी श्री स्वयं प्रकाश सोनी एवं 18 महापुराण समिति प्रमुख अशोक मनोहर जोशी एवं समिति के सदस्यों ने उक्त कथा में अधिक से अधिक संख्या में पधारने हेतु आग्रह किया है।

सरलता ही सफलता का मूल मंत्र है : मुनिश्री विभंजन सागर जी

धार। दिगंबर जैन समाज में दस लक्षण पर्व चल रहे हैं मुनिश्री विभंजन सागर जी मुनिराज ससंघ के पावन सानिध्य में संगीत मय समवशरण मंडल विधान का आयोजन कर आराधना कर रहे है। पर्युषण पर्व के तीसरे दिन उत्तम आर्जव धर्म के दिन श्री जी की शांति धारा करने का सौभाग्य नरेश कुमार श्रेणिक कुमार गंगवाल, प्रोफ़ेसर अनिल जैन परिवार व दीप प्रज्जवलन, गुरुदेव को शास्त्र भेंट और पाद प्रक्षालन का सौभाग्य सुरेन्द्रजी मौसम प्रथम झांझरी परिवार को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात गुरुदेव की दिव्य देशना में उत्तम आर्जव धर्म पर प्रवचन में कहा कि सरलता ही सफलता का मूल मंत्र है जो व्यक्ति जैसा अंदर से है वैसा ही बाहर से होना चाहिए यही सरलता है ऐसा व्यक्ति विश्वास से जीता है और सफल होता है ।

99 दिगंबर जैन समाज के पर्यूषण पर्व का तीसरा दिन - उत्तम आर्जव धर्म- दशलक्षण पर्व का तृतीय दिवस उत्तम आर्जव धर्म का अर्थ है। मन, वचन, काय लक्षण योग की सरलता व कुटिलता का अभाव उत्तम आर्जव धर्म हैं। जो विचार हृदय में स्थित हैं, वही वचन में कहता है कथनी और करनी में फर्क नहीं रखें यही आर्जव धर्म हैं।अपनी गलतियां को नहीं छिपाता, अतिचारों की निंदा, घृणा करता है और प्रायश्चित के द्वारा उनकी शुद्धि करता है। समाज के अध्यक्ष श्रेणिक गंगवाल ने बताया कि कल पर्यूषण के द्वितीय दिन संध्या में संध्याकालीन आरती, इंदौर से आए पंडित भरत जैन द्वारा जिनवाणी स्वाध्याय हुआ, तत्पश्चात मुनिश्री के पावन सानिध्य बहुत ही शानदार 1 मिनिट प्रोग्राम हुआ। सहयोग निकुंज रावका और श्रेयांश गंगवाल द्वारा दिया पुरस्कार श्रेणिक माधुरी गंगवाल द्वारा दिए गए । जानकारी संजय गंगवाल मीडिया प्रभारी द्वारा दी गई!

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिसनूर में हुआ नि:शुल्क साइकिल वितरण

बैतूल। आज 30 अगस्त को शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बिसनूर में मुलताई विधानसभा क्षेत्र के यशस्वी विधायक माननीय श्री चंद्रशेखर जी देशमुख,श्रीमती सोनाली इरपाचे (जनपद अध्यक्ष),श्री देवीराम जी बनखेड़े (शिक्षा समिति अध्यक्ष),श्रीमती प्रियंका अतुल ठाकरे (सरपंच),श्री शरदकांत प्रफुल्ल ठाकरे (जनपद सदस्य),श्री राजेश पाठक (विधायक Certainly),श्री केशोराव जी धोटे (उप सरपंच), श्री नामदेव धोटे (भू. पू. ज. स.) श्री मंचित लोखंडे जी (भू. पू. ज. स.) श्री विजेंद्र बर्डे (सचिव), श्री ललित धोटे (PTAअध्यक्ष),श्री ललित ठाकरे,श्री विजय

घोड़की (मंडल अध्यक्ष), श्री खुशराज बर्डे जी,डॉ. राजा पंडाग्रे, श्री दिलीप ठाकरे, श्री छोटू वागद्रे, श्रीमति चन्दा ठाकरे (पूर्व सरपंच) व गणमान्य नागरिकों की गरिमामयी उपस्थिति में कक्षा 9 वीं के छात्र -छात्राओं को 'निःशुल्क साइकिल योजना' अंतर्गत जनप्रतिनिधियों द्वारा साइकिल वितरित किया गया। इस अवसर पर विभाग से श्री शंकरलाल खपरये विकासखंड स्रोत समन्वयक प्र. पट्टन, व संकुल प्राचार्य श्री रमेश कुमार मालवीय ने सभी जनप्रतिनिधियों का स्वागत किया व कार्यक्रम का मंच संचालन श्री सावन्या डडोरे शिक्षक ने किया।

ओटीटी पर कई दिलचस्प फिल्में और शो

ओटीटी लवर्स के लिए इस शुक्रवार (29 अगस्त) को भी कई अच्छी और मनोरंजक फ़िल्में और शो आए हैं। कई स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर रोमांटिक से लेकर इंटेंस ड्रामा और क्राइम थ्रिलर तक कई नई फिल्में और सीरीज रिलीज हुई। वीकेंड पर वॉच के लिए ये परफेक्ट हैं। यहां जान लेते हैं कि ओटीटी के किस प्लेटफार्म पर कौन सी नई फिल्म या सीरीज रिलीज हुई।

मेट्रो ... इन दिनों

अनुराग बसु की फ़िल्म 'लाइफ इन अ ... मेट्रो' (2007) की स्पिरिचुअल सीक्वल मेट्रो ... इन दिनों' चार अलग-अलग उम्र के जोड़ों के मीठे-कड़वे रिश्तों पर बेस्ड है। जिनकी दुनिया इमोशनली एक-दूसरे से जुड़ती हैं और तेज-तर्रार शहरी जीवन की चुनौतियों को दिखाती है. इस म्यूजिकल रोमांटिक फिल्म में सारा अली खान, आदित्य रॉय कपूर, फ़ातिमा सना शेख, अली फ़ज़ल, नीना गुप्ता, अनुपम खेर, पंकज त्रिपाठी और कोंकणा सेन शर्मा जैसे प्रतिभाशाली कलाकार शामिल हैं. इस शुक्रवार यानी आज से ओटीटी के दिग्गज प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर इंजॉय किया जा सकता है।

शोधा

ये एंटरटेनिंग क्राइम थ्रिलर एक अधेड़ उम्र के शख्स रोहित की लाइफ पर बेस्ड है, जो एक घातक दुर्घटना के बाद अपनी पत्नी के रहस्यमय ढंग से गायब हो जाने पर गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराता है। कहानी में असली मोड़ तब आता है, जब पुलिस उसकी पत्नी को ढूंढ़ने में कामयाब हो जाती है, लेकिन रोहित दावा करता है कि वह एक धोखेबाज़

है। इस कन्नड़ सीरीज़ में सिरी रविकुमार, अरुण सागर और अनुषा रंगनाथ प्रमुख भूमिकाओं में हैं। इसे जी5 पर देखा जा सकता है।

गैंग

ये मलयालम डार्क कॉमेडी क्राइम सीरीज़ पांच लोगों के एक ग्रुप की कहानी है, जिसमें एक बौना भी शामिल है। वो मंदिरों के पास के फूल बाजारों में घुसने का एक बिजनेस प्लान बनाते हैं। अपनी योजना को हकीकत में बदलने के लिए, उन्हें इन बाजारों को कंट्रोल करने वाले एक लोकल गैंगस्टर का सामना करना पड़ता है। इसे सोनी लिव पर शुक्रवार से देख सकते है।

'सॉन्स ऑफ़ पैराडाइज़'

यह एक एक्साइटिंग बायोपिक है, जो राज बेगम की लाइफ स्टोरी पर बेस्ड है। वे एक फेमस सिंगर थीं और आज़ादी के बाद के दौर में लोकप्रियता के चरम पर पहुंचीं थीं। उनके फेम ने कश्मीर घाटी की महिला कलाकारों के लिए अपने सपनों को साकार करने की राह बनाई थी। इस फिल्म में सबा आजाद और सोनी राजदान मुख्य भूमिकाओं में हैं, जो दो अलग-अलग दौर में मुख्य भूमिकाएं निभा रही हैं। 'सॉन्स ऑफ़ पैराडाइज़' रिलीज हो गई और इसे प्राइम वीडियो पर देखा जा सकता हैं।

एटॉमिक

विलियम लैंग्विश की नॉन फिक्शन बुक एटॉमिक बाज़ार से इंस्पायर ये एक्शन-एडवेंचर सीरीज दो नागरिकों, मैक्स और जेजे, की कहानी है। वे उत्तरी अफ्रीका में एक क्रूर कार्टेल से रिलेटेड यूरेनियम की स्मगलिंग करने की कोशिश करते समय कानून प्रवर्तन और खतरनाक तस्करों से जुड़ी एक मुश्किल सिचुएशन में फंस जाते हैं। इसे शुक्रवार से जियो हॉटस्टार पर देख सकते हैं।

लव अनटंगल्ड

गोंग म्यांग, शिन यून सू, चा वू मिन, यूं सांग ह्योन और कांग मी ना स्टारर ये कोरियाई ड्रामा 19 साल की लड़की पार्क से री की कहानी है, जो अपने स्कूल में फेमस होना चाहती है। लेकिन, एक नए ट्रांसफर छात्र के आने के बाद उसकी प्लानिंग धरी की धरी रह जाती है। ये शुक्रवार को नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई है।

के पॉप्ड

मेगन थी स्टैलियन, साइ और काइली मिनोग, के पॉप जगत के सबसे बड़े नामों के साथ मिलकर एप्पल के नए गेम शो में अपने सबसे बड़े हिट गानों को नए अंदाज़ में पेश करेंगी। दिलचस्प बात यह है कि आठ एपिसोड वाली इस बैटल सीरीज का फ़ैसला सियोल के दर्शकों द्वारा किया जाएगा। के पॉप्ड को एप्पल टीवी प्लस पर देख सकते हैं।

'तेहरान' की बढ़ी पॉपुलरिटी, दूसरे ओटीटी पर भी स्ट्रीम

जॉन अब्राहम की स्पाई थ्रिलर फिल्म 'तेहरान' का 14 अगस्त को डिजिटल रिलीज हुई। ये फिल्म जी-5 पर ऑडियंस को इंप्रेस करने के बाद अब दूसरे ओटीटी प्लेटफॉर्म पर भी स्ट्रीम होने लगी। इसकी वजह है ऑडियंस का पॉजिटिव रिस्पॉन्स। 'तेहरान' का पहला प्रीमियर 14 अगस्त को जी-5 पर हुआ। इसके बाद फिल्म को ऑडियंस की बहुत सराहना मिली और महज 2 हफ्तों में ही ये नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम होने लगी।

ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स ने अपने ऑफिशियल एक्स हैंडल (पहले ट्विटर) से एक पोस्ट शेयर कर फैंस को ये जानकारी दी। पोस्ट में लिखा कि, एसीपी राजीव कुमार की बहुत बड़ी जिम्मेदारी या कुर्बानी! देखिए तेहरान, अब नेटफ्लिक्स पर। अब दर्शक घर बैठे आराम से जी-5 या नेटफ्लिक्स पर इस फिल्म को इंजॉय कर सकते हैं। अब जी-5 और नेटफ्लिक्स के जरिए इस फिल्म के पास

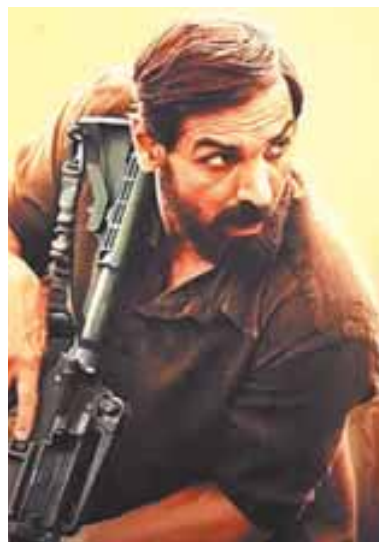

ज्यादातर ऑडियंस के पास पहुंचने का एक बेहतर ऑप्शन है।

'तेहरान' के जरिए जॉन अब्राहम ने देश के लोगों को सच्ची घटना दिखाने की कोशिश की है, जो 2012 में इस देश में हुई थी। फिल्म में जॉन अब्राहम एसीपी राजीव कुमार की भूमिका में नजर आते हैं जो 2012 में इंडिया में इजरायली दूतावास के बाहर हुए बम धमाके की जांच में जुटे रहते हैं।

पहले तो ये किसी आतंकी हमले का संकेत लगता है। लेकिन, जब इसकी गहनता से जांच की जाती है, तो एसीपी राजीव को समझ आता है कि ये पूरा खेल इंटरनेशनल पॉलिटिक्स का है। मैडॉक फिल्म्स और बेक माई केक के बैनर तले बनी इस फिल्म के स्टार कास्ट की बात करें तो इसमें जॉन अब्राहम के साथ नीरू बाजवा और मानुषी छिल्लर को भी लीड रोल में देखा गया है। साथ ही मधुरिमा तुली, अली खान और एलनाज नारौजी भी महत्वपूर्ण रोल में हैं।

रियल बॉक्स

एक ही दिन रिलीज हुई दो फिल्मों की दास्तां

हेमंत पाल
लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी फिल्मों का इतिहास बड़ा विचित्र है। इसके पन्नों पर कई ऐसी सच्चाई दर्ज है, जो अविश्वसनीय होने के साथ कभी दोबारा नहीं घटी। ऐसी ही एक अनोखी बात 50 साल पहले घटी थी, उसके बाद ऐसा फिर नहीं हुआ। मामला है 1975 के 15 अगस्त के दिन रिलीज हुई फ़िल्म 'शोले' और 'जय संतोषी मां' का। दोनों फिल्मों के कथानक एक-दूसरे के विपरीत थे। 'शोले' की कहानी हिंसा और मारधाड़ से भरपूर थी और 'जय संतोषी मां' पूरी तरह धार्मिक फिल्म। 'शोले' बड़े कलाकारों, बड़े डायरेक्टर और नामचीन कहानीकार की फिल्म थी। जबकि, 'जय संतोषी मां' में कोई भी 'बड़ा' नहीं था। यहां तक कि जिस देवी पर फिल्म का कथानक रचा गया था, वो भी ऐसी नहीं थी जिन्हें सब पूजते या जानते हों। आशय यह कि वे हिंदू देवी-देवताओं की तरह संतोषी माता को जानने वाले बहुत कम भक्त थे।

दोनों फ़िल्में एक ही दिन रिलीज हुई और दोनों की शुरुआत ठंडी रही। 'शोले' में धर्मेंद्र, अमिताभ बच्चन और संजीव कुमार के अलावा हेमा मालिनी और जया भादुड़ी जैसे कलाकार थे। जबकि, संतोषी मां में कोई भी ऐसा कलाकार नहीं था, जिसे दर्शक पहले से जानते हों। 'शोले' की निर्माण लागत करीब 30 करोड़ आंकी गई, जबकि 'जय संतोषी मां' कुछ लाख में बनी थी। कुछ दिन बाद जैसे चमत्कार हो गया। 'शोले' ने धीरे-धीरे रफ़्तार पकड़ी, उधर 'जय संतोषी मां' की लोकप्रियता ने आसमान फाड़ दिया। वास्तव में ये चमत्कार ही तो था। ऐसा चमत्कार जो दोबारा नहीं हुआ। बॉक्स ऑफिस के नजरिए से आकलन किया जाए, तो 'जय संतोषी मां' कमाई के मामले में 'शोले' से बहुत आगे थी। क्योंकि, 'शोले' का बजट ज्यादा था, इसलिए उसकी कमाई को भी उसी हिसाब से देखा जाएगा। उसके सामने 'जय संतोषी मां' बहुत कम बजट में बनी थी, तो उसकी कमाई का आकलन भी कई गुना ज्यादा था। इतना कि आज भी उस रिकॉर्ड को कोई तोड़ नहीं सका।

'जय संतोषी' मां ने फिल्म के जानकारों की धारणा बदल दी थी। क्योंकि, फिल्म की पहले शो की बिक्री 56 रुपए दूसरे में 64 और शाम के शो की कमाई 98 रुपए रही थी। नाइट शो का कलेक्शन मुश्किल से सौ रुपए हुआ था। लेकिन, सोमवार की सुबह जो हलचल शुरू हुई, उससे सब चमत्कृत थे। जिस भी थियेटर में फिल्म लगी, वहां दर्शक टूट पड़े। शो के बीच में उछाली गई चिल्लर बटोरकर थियेटर की सफाई करने वाले मालामाल हो गए। इस फिल्म ने अपनी लागत से कई गुना बिजनेस करके 'शोले' जैसी फिल्म को टक्कर दी थी! दोनों फिल्मों के कथानक में विरोधाभास था। इसके बावजूद 'जय संतोषी माँ' का बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 'शोले' के मुकाबले ज्यादा था! 'शोले' में गब्बर सिंह की गोलियां खून बिखेर रही थी, जबकि 'जय संतोषी माँ' में दर्शक सिनेमाघर में आरती गा रहे थे। दर्शकों ने इसे फिल्म की तरह नहीं लिया, बल्कि सिनेमाघर को मंदिर की तरह पूजने लगे थे। दर्शक हॉल में चप्पल-जूते पहनकर नहीं आते! श्रद्धा इतनी उमड़ती थी, कि आरती के वक्त लोग सीट से खड़े होकर तालियां बजाते और सिक्के चढ़ाने लगते थे! गांवों और शहरों में हर जगह श्रद्धा का सैलाब उमड़ पड़ा था। संतोषी माता की व्रत कथा सुनी और सुनाई जाने लगी! गुड़-चने का प्रसाद बंटने लगा।

दर्शकों के लिए 'जय संतोषी माँ' एक धार्मिक फिल्म नहीं, बल्कि जीवन को प्रभावित करने वाला प्रसंग था। यह सब देश के सैकड़ों छोटे शहरों और गांवों में महीनों तक दोहराया गया। पहली बार निर्देशक बने विजय शर्मा की इस फिल्म ने जो इतिहास बनाया, वो आजतक नहीं टूटा। 1975 की ट्रेड गाइड की सालाना रिपोर्ट में 'जय संतोषी मां' और 'शोले' को 'दीवार' से ऊपर ब्लॉकबस्टर का दर्जा मिला था। कई शहरों में इस फिल्म ने गोल्डन और सिल्वर जुबली मनाई। 'फिल्म इन्फॉर्मेशन पत्रिका' के अनुसार, बंबई के मलाड में महिलाओं के लिए सुबह 9 बजे का अलग शो शुरू किया गया था। इस फिल्म का असर सिर्फ कमाई तक सीमित नहीं था। 'जय संतोषी मां' ने फिल्मों के कमजोर पड़ते बाजार में नई जान फूंकी थी। फिल्म में संतोषी माता का किरदार निभाने वाली अनीता गुहा ने एक इंटरव्यू में अपना अनुभव साझा किया था। इसके

मुताबिक मुंबई के बांद्रा में माइथोलॉजिकल फिल्मों का मार्केट नहीं था, वहां ऐसी फिल्में नहीं चलती थीं। लेकिन, 'जय संतोषी मां' उसी इलाके के सिनेमाघर में 50 हफ्तों तक चली।

अब जिक्र हिंदी सिनेमा की कल्ट फिल्म 'शोले' का। यह ऐसी फिल्म है, जिसे पचास साल पहले से आजतक हर वर्ग के दर्शक ने सराहा। सलीम-जावेद की जोड़ी की लिखी यह फिल्म 204 मिनट लंबी है। इसमें सितारों की लम्बी चौड़ी फौज है, जिनमें संजीव कुमार, हेमा मालिनी, जया भादुड़ी, अमजद खान, हेलेन, सचिन, एके हंगल, विजू खोटे, मैक मोहन, सहित कई कलाकार शामिल है। फिल्म के लिए हैदराबाद के नजदीक पूरा एक गांव रामगढ़ बसाया गया था जो आज भी अस्तित्व में है। फिल्म का संगीत आरडी बर्मन ने तैयार किया था और इसे 70 एमएम और स्टीरियोफोनिक साउंड में फिल्माया गया था। दरअसल, 'शोले' जैसी फिल्म बनाना आसान नहीं था। रमेश सिप्पी ने इस फिल्म की मेकिंग का किस्सा एक इंटरव्यू में बताया, जो भी अपने आप में अविश्वसनीय कहा जाएगा। रमेश सिप्पी के मुताबिक 'शोले' की रायटर जोड़ी सलीम-जावेद एक दिन उनके पास आए, तब वे एक फिल्म की शूटिंग में बहुत व्यस्त थे। उन्होंने कहा कि एक कहानी है, जरा सुन लो। मैंने कहा कि बाद में सुनूंगा तो दोनों बोल पड़े, अभी सुनना पड़ेगी। बस दो मिनट का टाइम चाहिए। मेरे हां कहते ही दोनों ने कहानी सुनाना शुरू कर दी।

उन्होंने पूरी कहानी वाकई में दो मिनट में सुना दी। रमेश सिप्पी को भी कहानी अच्छी लगी। 'शोले' की कहानी फायनल करने के लिए सलीम-जावेद और रमेश सिप्पी दो महीने से ज्यादा समय तक एक ही कमरे में रहे। न दिन देखा न रात। फिल्म के एक-एक हिस्से और सीन के बारे में विचार शुरू किया गया। तीनों बार-बार कागज फाड़ते और नए सिरे से लिखते। आखिरकार तीनों की मेहनत रंग लाई और 'शोले' की पूरी स्क्रिप्ट पूरी कर ली गई। सिप्पी ने बताया कि जब हमने अमजद खान को लेकर गब्बर सिंह की शूटिंग शुरू की, तो सबसे बड़ी परेशानी यह आई कि गब्बर की दहशत को कैसे दिखाया जाए, ताकि दर्शक भी सिहर जाएं। संगीतकार आरडी बर्मन साहब ने अमजद खान के अपीयरेंस के लिए एक खास तरह का बैकग्राउंड म्यूजिक भी रचा।

गब्बर की डाकू वाली वर्दी वगैरह सब कुछ का इंतजाम कर लिया गया। मगर जब वह पहली बार परदे पर आता है, तो पहाड़ी पर चलते हुए उसके साथ एक बेल्ट से भी चट्टान से टकराते हुए एक खौफनाक आवाज निकलती है। इसके लिए हमें बहुत ही परेशानी उठानी पड़ी। गब्बर के लिए खास बेल्ट की तलाश शुरू हुई। मुंबई के भंगार बेचने वालों के यहां जा-जाकर पुरानी बेल्ट की तलाश करनी शुरू कर दी। खोज करीब एक हफ्ते तक चली। पूरे मुंबई से करीब 200 बेल्ट जुटाए। इसे लेकर शूटिंग वाली जगह पर लेकर आए। जब बेल्ट को अमजद खान को दिया और उनसे चट्टान पर चलते हुए बेल्ट को घसीटने के अंदाज में चलते। जब अमजद खान उस बेल्ट को लेकर चलते, तो उससे खास किस्म की खौफनाक आवाज आती। उनका डायलॉग था 'कितने आदमी थे!'

ये दोनों फ़िल्में इसलिए भी यादगार बन गई, क्योंकि दोनों फिल्मों का दर्शक वर्ग बिल्कुल अलग था। 'शोले' को हिंदी फिल्मों के ऐसे शौक़ीन दर्शकों ने पसंद किया जिन्हें फार्मूला फ़िल्में पसंद थी। इसके अलावा धर्मेंद्र, अमिताभ और संजीव कुमार के अलावा हेमा मालिनी जैसे कलाकारों को पसंद करने वालों की भी लंबी फ़ौज थी। आपातकाल के उस दौर में ऐसी फ़िल्में बनना आसान नहीं था, फिर भी फिल्म बनी और चली। जबकि, 'जय संतोषी मां' के दर्शकों में महिलाओं की संख्या ज्यादा रही। ग्रामीण इलाकों में तो इस फिल्म ने तूफान मचा दिया था। वास्तव में यह फिल्म मनोरंजन का माध्यम न होकर आस्था का सैलाब था। एक ध्यान देने वाली बात यह भी कि 'शोले' और 'जय संतोषी मां' ने एक दूसरे की सफलता को कहीं प्रभावित नहीं किया और न दर्शक ही छीने। दोनों फिल्मों को पसंद करने वाला वर्ग भी अलग था। लेकिन, व्यावसायिक सफलता के मामले में 'जय संतोषी मां' का पलड़ा भारी रहा। क्योंकि, कम बजट में बनी फिल्म का कमाई का आंकड़ा बहुत ज्यादा था। खास बात यह कि आज भी इन दोनों फिल्मों को याद किया जाता है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

हिंदी सिनेमा में भी विराजे विघ्नहर्ता श्री गणेश

अशोक जोशी

इन दिनों पूरे देश में गणेशोत्सव की धूम मची है। घर-घर में विघ्नहर्ता श्री गणेश विराजे हैं। बॉलीवुड में भी गणेशजी का जलवा शानदार होता

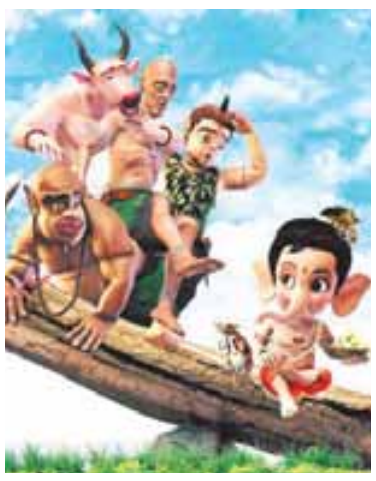

है। सभी धर्म के फिल्मी सितारे अपने घरों में गणेश स्थापना करते हैं। कभी राजकमल फिल्म्स और आरके स्टूडियो में गणेशजी की बहुत धूमधाम से स्थापना की जाती थी और पूरा फिल्म उद्योग उनके दर्शन के लिए उमड़ पड़ता था।

एक जमाना वो था जब तमाम सिनेमाघरों में पहले शो की शुरुआत में गणेश वंदना या गणेश जी की आरती की जाती थी। इंदौर के सरोज सिनेमाघर में तो सभी त्यौहार धूमधाम से मनाए जाते थे। जन्माष्टमी की रात वहां कृष्ण जन्म मनाया जाता था और दर्शकों को प्रसाद वितरित किया जाता था। लेकिन, ये सब गुजरे जमाने की बात हो गई। बावजूद इसके हिंदी फिल्मों में गणेशजी की झलक दिखाई दे ही जाती है। अपनी फिल्मों में झांके तो विघ्नहर्ता गणपति सिनेमा के पर्दे पर हमेशा से ही स्थान पाते रहे। चूंकि कुछ अरसा पहले तक अपने यहां बनने वाली अधिकांश हिंदी फिल्मों में कहानी की पृष्ठभूमि मुंबई की ही होती थी, इसलिए वहां मनाए जाने वाले डांडिया, गणपति जैसे त्योहारों का उनमें सहज ही चित्रण दिखाई देता था।

यदि फिल्मों के इतिहास में झांके तो विघ्नहर्ता गणपति सिनेमा के पर्दे पर हमेशा से ही स्थान पाते रहे। कुछ अरसा पहले तक अपने यहां बनने वाली अधिकांश हिंदी फिल्मों में कहानी की पृष्ठभूमि मुंबई की ही होती थी। इसलिए वहां मनाए जाने वाले जन्माष्टमी, डांडिया, गणपति जैसे त्योहारों का उनमें सहज ही चित्रण दिखाई देता था। गणेश जी वैसे भी सभी को प्रिय हैं, और खासतौर से बच्चे उनमें अपना मित्र देखते हैं। इसलिए हाल के बरसों में बाल गणेश, माय फ्रेंड गणेशा जैसी एनिमेशन फिल्में खूब पसंद की गई। वैसे यह देख हैरानी हो सकती है कि हिंदी फिल्मों में गणपति से जुड़े अधिकांश दृश्य व गीत अपराधियों, गैंग्स्टरों आदि पर फिल्माए गए।

रामगोपाल वर्मा की 'सत्या' (1998) के

क्लाइमैक्स में अपराधी नायक सत्या समुद्र तट पर गणपति विसर्जन की भीड़ में घुस खलनायक भाऊ को मारता है। इसे हिंदी फिल्मों में गणपति विसर्जन के सबसे अधिक यथार्थवादी दृश्यों में गिना जाता है। अमिताभ बच्चन की अग्निपथ' (1990) संजय दत्त की वास्तव (1999), ऋतिक रोशन वाली अग्निपथ (2012) या फिर 2017 में अमिताभ बच्चन वाली 'सरकार 3' में भी गणपति के विसर्जन के भव्य दृश्यों के संग अपराधियों और पुलिस का चित्रण किया गया। इन सभी को दर्शकों का भरपूर प्यार मिला। वैसे देखा जाए तो गणेश जी की कथा दिखाती फिल्में भी हमारे यहां हमेशा से बनती आयी है।

मूक सिनेमा के दौर में गजानन वी साने निर्देशित गणेश अवतार (1922), 1930 में आई 'गणेश जन्म' आदि का उल्लेख मिलता है। 1950 में होमी वाडिया की 'श्री गणेश महिमा', 1951 में जयंत देसाई की 'श्री गणेश जन्म' और 1955 में जसवंत जवेरी की 'श्री गणेश विवाह' को खासा पसंद किया गया था। 1962 की श्री गणेश, 1972 की 'जय गणेश' जैसी फिल्मों को भी देखा गया। वी शांताराम भी भगवान गणेश के अनन्य भक्त रहे। उनकी फिल्म 'नवरंग' में गणेश जी और उनके प्रतीक हाथी को लेकर का भव्य और सुंदर चित्रण किया गया जो आज भी दर्शकों की यादों में बसा हुआ है।

गणेश जी की स्तुति या आरती वाले गीतों की तो हिंदी फिल्मों में भरमार रही। विशेषकर 17वीं सदी के प्रख्यात संत स्वामी समर्थ रामदास द्वारा मराठी में रचित गणेश वंदना 'सुखकर्ता दुखहर्ता वार्ता विघ्नाची' को तो गैर मराठी भाषी लोग भी अब बड़े श्रद्धा भाव से गाते हैं। यह आरती असंख्य फिल्मों का हिस्सा बन चुकी है। लेकिन, फिल्म 'वास्तव' में आने के बाद से इसे हिंदी के समाज ने आगे बढ़कर अपनाया। हिंदी फिल्मों में गणेश से संबंधित लोग भी हुए जिनमें संगीतकार गणेश जो कि संगीतकार प्यारेलाल के भाई थे, उन्होंने कुछ फिल्मों में मधुर संगीत दिया। हिंदी फिल्मों में किसी कलाकार का नाम भले ही गणेश या विनायक न हो, लेकिन हिंदी फिल्मों के एक कोरियोग्राफर गणेश आचार्य को सभी फिल्मकार सम्मान याद करते हैं। भगवान गणेश की तरह ही भारी भरकम डीलडौल के स्वामी गणेश आचार्य अपनी मंद-मंद अदाओं और हंसते हुए चेहरे के साथ जब गोविन्दा जैसे कलाकारों को पर्दे पर डांस करवाते तो दर्शक रोमांचित और आल्हादित हो जाता है।

फिल्मी कथानक और फिल्म के शीर्षक के अलावा हिन्दी फिल्मों में गणेश भक्ति पर आधारित गीतों ने भी खूब रंग बिखेरे हैं। गणेश जी से जुड़े अन्य सुपरहिट गीतों की बात करें तो 1981 की 'हमसे बढ़ कर कौन' का 'देवा ओ देवा गणपति देवा तुमसे बढ़ कर कौन' की तूती आज भी बोलती है। वैसे इस अवसर पर 2009 में आई सलमान खान की 'वांटेड' का गाना तेरा ही जलवा, 2006 में आई शाहरुख खान के डॉन की तुझको फिर से जलवा दिखाना ही होगा, 2012 में आई ऋतिक रोशन वाली 'अग्निपथ' का देवा श्री गणेशा, 2013 में आयी फिल्म एबीसीडी-एनी बडी कैन डांस' के दो गीत 'शंभूसुताय लंबोदराय मोरिया' व 'साड्डा दिल वी तूझ' के अलावा 2015 की 'बाजीराव मस्तानी' का 'गजानना गजानना गजराया' को आज की पीढ़ी बड़े ही चाव से सुनती, गाती और इन पर नाचती भी है।

चौपाटी ने, चौपट किया रेडऽऽ!

अधिकार

प्रकाश पुरोहित

''बोलो, क्या खाओगे?''

''कुछ नहीं यार, सराफे से आ रहा हूं।''

''तो क्या अकेले ही...?'

''नहीं, इधर आ रहा था तो वहां कॉलेज के दोस्त खड़े रबड़ी खा रहे थे, बस, रोक लिया। फिर बात रबड़ी पर ही कहां खत्म होती है... तो बस, गिनती भी मुश्किल क्या-क्या खाया! अब तो कसम खाने की भी जगह नहीं बची है।''

''सुनो, आज शाम को कुछ बनाना मत, सराफे चलेंगे, मामाजी आ रहे हैं, बोले हैं घर का तो दाना भी मुंह में नहीं लूंगा।''

''वैसे हमें भी गए कितने दिन तो हो गए!''

''गए नहीं तो क्या, आ तो जाता है तुम्हारे लिए घर पर ही सराफा!''

''घर में वो बात कहां आ पाती है, जो वहां चीजें कभी बचती नहीं। सस्ता भी ऐसा... कि कोई भी खा ले! क्या सही में ऐसी कोई जगह है वहां? बड़ी इच्छा है, एक बार तो इंदौर सिर्फ इसीलिए जाना है।''

''सराफा कहते हैं उस जगह को। पहले तो इंदौरी ही नजर आते थे, लेकिन अब तो देश के बाकी हिस्सों से ही नहीं, विदेशों से भी चले आते हैं! मेहमान फरमाइश करते हैं सराफा जाना है एक बार। सारे ठीये बार-बार, सराफा एक बार जैसा मामला है।''

''जब से सुना है, सिर्फ सराफा खाने के लिए ही इंदौर आऊंगा, देखें तो जरा!''

''सुनो हम घरवाले आज रात सराफा जा रहे हैं, तुम भी आ जाओ ना, मेरी रबड़ी मीठी हो जाएगी। हां, दोस्तों की भीड़ लेकर मत आना, बस वो तुम्हारा चमचा दोस्त है ना, बस उसी को ले आना।''

''अभी कल ही तो गया था दोस्तों के साथ!''

''तो क्या सराफे में आज इसलिए तुम्हें कोई कुछ नहीं देगा कि कल आ तो गए थे?''

''हम और तुम होते तो कुछ अलग बात होती, पूरी फमिली के साथ रहोगी तुम तो!''

ओटले पर बैठ या खड़े-खड़े खाने में है। फिर घर में पूरा सराफा तो आ भी नहीं सकता। वहां तो एक खाने जाओ तो बीस चीजें मिल जाती हैं। हर एक की अलग पसंद, चखना तो हो ही जाता है।''

''हां यह बात तो है, वहां चीजें नहीं, माहौल खाया जाता है।''

''मुझे तो यही अच्छा लगता है कि वहां कोई भी तुर्रम खां क्यों नहीं हो, खड़े-खड़े और हाथ में लेकर ही खाना पड़ता है। सही मायने में समाजवाद तो सराफे में ही है, मंदिर में भी नहीं, वहां भी वीआइपी हो जाते हैं।''

''कल तुम्हारे घर आया था रात को, कोई भी नहीं था, ताला लगा था?''

''तुम भी यार, पता तो है कि संडे यानी सराफा। वाइफ कहती है, हफ्ते भर तुम कुछ भी करो, एक दिन सराफे का। तो भैया जाना ही होता है, फिर इतने लोग मिल जाते हैं, लगता है जैसे शादी के रिसेप्शन में हों। कई बार तो जेब में हाथ डालने की भी जरूरत नहीं पड़ती। है कि नहीं!''

''लेकिन ऐसा भी तो होता है कि जेब खाली करना पड़ गई, है कि नहीं!''

''अब यह तो मौके-मौके की बात है, अपन ने अपना खाया सराफे में तो क्या खाया। या तो हमें कोई खिलाए या हम किसी को खिलाएं, है कि नहीं!''

''तो फिर मिलते हैं रात को सराफे में, वहीं पार्टी हो जाएगी, बहुत दिन हो गए। बर्थ डे भी मन जाएगा गराडू से।''

''वैसे तो कल ही फैमिली के साथ गया था सराफे... लेकिन क्या फर्क पड़ता है, आज फिर चले चलेंगे। सराफे से भी कहीं मन भरता है।''

''हां यार, यह बात अच्छी कही कि सराफे से पेट भले ही भर जाए, मन नही भरता है।''

''आप इंदौर से हैं, सुना है, वहां कोई खाने का ऐसा ठिया है, जो रात को नौ बजे बाद शुरू होता है और देर रात दो बजे तक चलता रहता है। भीड़ हमेशा रहती है और ''तुम्हें कुछ याद भी रहता है, तीन साल पहले आज ही के दिन तो सराफे में पहली बार मिले थे हम-तुम... जब तुमने दौड़ रही गाय से मुझे बचाया था। तुम भूल जाओ, मगर मुझे तो सराफा हमेशा याद रहता है, वरना तुम कैसे मिलते!''

''फिर गाय दौड़ती आ गई, तुम्हारी तरफ तो?''

''इसीलिए तो कह रही हूं, आ जाओ, बचा लेना फिर, फिर...

कुछ बरस पहले तक यही कहा जाता था कि रात को 'सराफे जाएंगे', यानी मतलब साफ होता था खाने-पीने, मौज-मस्ती! सोना-चांदी खरीदने वैसे भी गिनते के लोग दिन में जाते भी थे तो उसका यूं खुलेआम जिक्र नहीं होता था। यदि सौ लोग यह कहते थे कि 'सराफे गए थे' तो सौ ही यह समझ लेते थे कि खाने गए होंगे। कोई सोने-चांदी का भाव नहीं पूछता था, क्योंकि तब सराफे का मतलब सिर्फ सराफा यानी रात का खाना-पीना होता था। पत्नी कहती कि आज शाम खाना बनाने का मन नहीं है तो पति खुश हो जाता ''तो चलो सराफे चलते हैं, कुछ चुटुर -पुटुर खा लेंगे।'' सोना-चांदी जनम-जमाने से नहीं खरीदा हो, लेकिन, कोई ही दिन ऐसा जाता होगा कि सराफे का जिक्र ना हो, ऐसा हो नहीं सकता।

जब तक इंदौर में जूने इंदौरी रहे यानी खालिस, तब तक सराफे को सिर्फ 'सराफे' ही बोलते रहे। वो तो जब बाद में शहर का मिजाज बदला, छप्पन दुकान आ गई और देश भर के लोग यहां आकर बस गये तो सराफे की बजाय 'सराफा चौपाटी' कहने लगे। पहले कोई चौपाटी बोलता ही नहीं था। असली इंदौरी की आज भी यही पहचान है कि वह 'सराफे' ही बोलता है और उसका आशय खाने-पीने से ही होता है। कोई चौपाटी बोले तो समझ लेना बाहरी है। अगर आज भी 'सराफे' ही कहा जाता रहा होता, तो इसे हटाने की बात भी नहीं होती, यह तो चौपाटी ने चौपट कर दिया है!

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

लेटिंग गो यानी जाने भी दो यारों

हिंदी में लेटिंग गो का अर्थ जाने देना, मुक्त करना या छोड़ देना। ये बात किसी वस्तु चीज़ व्यक्ति को पकड़े रहने की बजाय उसे छोड़ देने की प्रक्रिया के बारे में है। पकड़े रहने के चक्कर में जैसा पुरानी चीज़ों से घर भर लेना, बच्चों के कपड़े, खिलौने, पुरानी अतीत की यादें, व्यक्ति जो आपके साथ रहना नहीं चाह रहे हैं ऐसे रिश्ते जो संभल नहीं पा रहे हैं, आप बांधने की कोशिश में चिंता में घुले जा रहे हैं। चलिये हम अलग-अलग संदर्भ में देखें इसे लेट इट गोया लेट गो कर दो ऐसे भी कहा जाता है पर ये सब क्या इतना आसान है अगर आध्यात्मिक दृष्टि से हम इसे देखें तो ''किसी भी चीज़ को छोड़ने या त्याग देना खासतौर से जब वो आपकी बेहद प्रिय हो तो यह लेट गो आसक्तियों, मोह माया भावनाओं या विचारों को छोड़ने की प्रक्रिया है जो अब आपके जीवन में ख़लल मचाने के अलावा कुछ नहीं कर रहे। जाने देने की क्रिया में आपको बहुत परेशानी होगी पर त्याग ही तो हमें मजबूत बनाता है आप देखियेगा शुरू में बुरा लगेगा फिर धीरे-धीरे मन शांत हो जायेगा।

अभी हाल ही की बात है मेरा डौगी जोई लगभग 1 साल से आर्थराइटिस से पीड़ित था उसके पीछे के दोनों पैर काम नहीं करते थे पर चूंकि मेरा कमरा ऊपर था तो वो घिसट घिसट कर ऊपर आता डॉ मुकेष तिवारी जिन्होंने सारा जीवन उसकी तीमारदारी की उन्होंने नोट लिख कर भेजा ''जोई को सीढ़ी ना चढ़ने दी जाय'' सो हमने सीढ़ी में छोटा सा गेट लगा दिया मेरा और जोई दोनों का रात में रोना शुरू हो जाता हम रात में उसे ऊपर ले आते अचानक अभी पंद्रह दिन पहले उसके चारों पैर बेकार हो गये अब ना वो टॉयलेट के लिये बाहर जाता उसे बेड सोर होने लगे पर चूंकि उसे मेरे बिना अच्छा नहीं लगता था तो हम ऊपर ले आये बाकी वो अच्छा स्वस्थ था पर सोर बढ़ रहे थे दर्द भी। बाकी सब ठीक था। अब इस हालत में हम क्या करें बाकी वो अच्छे से खाता पीता था। मेरे बच्चों ने डॉक्टर से सलाह की और कहा, लेट हिम गो!

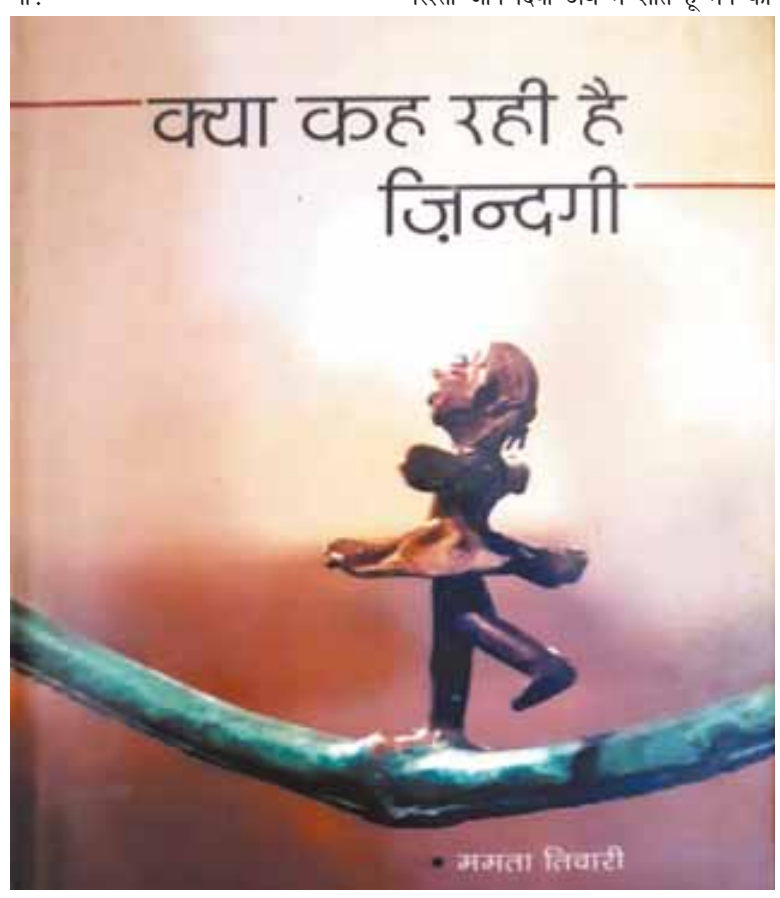

मैंने अपने आपको अपरोध बोध में डाल लिया बड़बड़ाने लगी कि मैं कितनी निर्दयी हूँ उसे जीते जी यूथनेजिया करवा रही हूँ। डॉक्टर भी थोड़ा असमंजस में थे पर हमने भविष्य का सोच के, उसकी हालत बदतर ना हो उसे इंजेक्शन लगवा दिये। हाँ मैं दुःखी थी, वो मेरे साथ सोता था, 5 बजे उसका केयर टेकर आता सो मेरा सोना उल्टा सीधा था मेरे बेटे ने बोला आज आप बेफ्रिक सोओगी मुझे बुरा लगा ''जोई के बिना''। उसकी दर्द भरी आवाज, उसका बार बार गीला हो जाना, ज्यादा खाना मांगना सब बंद हुआ, मेरी नींद टूटना सब गायब और साल भर बाद मैं चैन की नींद सोई। यूँ मैंने शांति से अपना एक रिश्ता जाने दिया अब मैं शांत हूँ मन की बेचैनी ख़त्म हुई।

दूसरी चीज़ है भौतिक वस्तुओं को छोड़ना। तमाम चीज़ें जो आपने ये कह के रख छोड़ी हैं कि जब मैं पतली होऊँगी तब ये ड्रेस पहनूँगी, ये काम आ जायेगा, किचन के नये डब्बे ले आई पुराने नहीं बांटे। घर में कबाड़ के साथ नकारात्मक ऊर्जा एकत्र हो रही सो लेट इट गो लालच छोड़ बांट दीजिये किसी का भला हो जायेगा।

तीसरी बात है कोई ऐसी परिस्थिति जिससे आप सालों से जूझ रहे हैं पर बात नहीं बन रही और आप बेचैन है उस पर आपका नियंत्रण नहीं है तो बहस में भी ना पड़े, थोड़ा नुकसान होता है होने दें पर उसको छोड़ने के बाद जो सुकून मिलेगा वो भरपाई के लिये काफी है।

कोई प्यारा दोस्त जो आपकी समझ से अब बाहर होता जा रहा आपने रिश्ते को जोड़े रखने के लिये खूब प्रयास किये पर रिश्ता नहीं संभाला जा रहा बिखरा जा रहा है आप की सोच है कि आप उस दोस्त के बिना ज़्यादा बेचैन होंगे लोग क्या कहेंगे, पर साथ में भी तो तकलीफ़ है ऐसे समय थोड़े समय के लिए लेट हिम गो करें अगर उसे भी आपकी कमी अखरेगी तो वो वापस आयेगा।

सबसे ज़रूरी है मानसिक या भावनात्मक रूप से छोड़ना इसमें आपको किसी साथ काउंसलर की ज़रूरत होगी। ये सबसे ज़्यादा चोट पहुँचाने वाली बात होगी इसमें आपके ज़ख्म नहीं दिखेंगे पर अंदर से घायल होंगे ऐसे में आप काउंसिलिंग, ध्यान, वॉक, कीजिये पर लेट देम गो उन विचारों को मैं कहूँगी जाने दो, वो ऐसे नहीं जायेंगे इसके लिये आपको डायवर्ट होना होगा जो मैंने ऊपर बताया है वो इन विधियों से धीरे धीरे छूट जायेगी। चिंता मत करो जाने दो गहरी सांसे लो गर बार-बार याद आये और गहरी सांस छोड़ दो कभी सामना हो जाये तो मुंह मत बनाना मुस्कुरा के ज़रूर पूछना और क्या कह रही है ज़िंदगी।

मैंने चाहा तो बहुत था
वो शख्स रहे मेरी ज़िंदगी में
पर कुदरत को कुछ और ही मंजूर था
माँ कहती थी शिद्दत से मांगोगे तो
वो भी मिलेगा जो मांगा ना था
पापा कहते थे जो दुआओं से नहीं मिला
समझ, वो तेरा था ही नहीं
पर मैं अब समझती हूँ
कुछ समय वो रहा मेरे साथ
बस्स मेरी दुनिया में ठहरा नहीं।

दृष्टिकोण

मुकेश नेमा

लेखक मध्य प्रदेश के प्रशासनिक अधिकारी हैं।

अमीरों के लिए गणेश जी सीख

गोलमटोल गणेश जी को देखकर कुबेर ने सोचा कि भूखा रह जाता होगा बेचारा। कहा खाने में संकोच मत करना। पेट भर कर खाना। गणेश जी समझदार। समझ गए कि कुबेर घमंडी है। सो उन्होंने कुबेर के किचन में मौजूद सारा खाना, सारे रूपए पैसे। हीरे जवाहरात, घर और उसकी तमाम जमीनें खा ली। कुबेर पसीना पसीना। गणेश जी ने कहा मैं अभी भी भूखा हूँ। और चाहिए। कुबेर समझा फिर। माफी मांगी गणेश जी को उनके घर छोड़ आए।

कुबेर हैं धन के देवता। देवताओं के ख़ज़ांची। तिजोरी में धन हो और बंदा फूला फूला न घूमें ये न आदमियों के लिए मुमकिन है न देवताओं के लिए। जेब भरी हो तो आदमी आसमान पर लात मारते चलता है यही हाल कुबेर का था। एक बार कुबेर शंकर जी से मिलने गए। शंकर जी के पास अपना कोई घर नहीं। मय परिवार ससुराल में डेरा। सादा जीवन उच्च विचार। कोई तामझाम नहीं। कुबेर को दया आई। उसने भोलेनाथ से कहा घर आइए खाना खाने। शंकर जी खुद तो नहीं गए पर अपने छोटे लड़के को कुबेर के यहां खाना खाने भेज दिया।

गोलमटोल गणेश जी को देखकर कुबेर ने सोचा कि भूखा रह जाता होगा बेचारा। कहा खाने में संकोच मत करना। पेट भर कर खाना। गणेश जी समझदार। समझ गए कि कुबेर घमंडी है। सो उन्होंने कुबेर के किचन में मौजूद सारा खाना,सारे रूपए पैसे। हीरे जवाहरात,घर और उसकी तमाम जमीनें खा ली। कुबेर पसीना पसीना। गणेश जी ने कहा मैं अभी भी भूखा हूँ। और चाहिए। कुबेर समझा फिर। माफी मांगी उसने गणेश जी को उनके घर छोड़ आए।

यह कहानी हमें क्या सिखाती है? यही कि अमीरों को विनम्र रहना चाहिए। जब हम लोग बच्चे थे तब के बुजुर्गों ने,बड़े बड़े सेठों ने गणेश जी

की ये वाली कहानी आत्मसात् कर रखी थी। वो मोटा पहनते थे। मीठा बोलते थे और मीठा बोलकर सामने बैठे गरीब की जेब में मौजूद आखरी रूपया भी निकाल लेते थे। ऐसा भी नहीं वो खराब लोग थे। वो वक्त जरूरत गरीबों की मदद भी करते थे। उन्हें तगड़े ब्याज पर उधार देते थे। उसकी जमीन अपने नाम लिखवा लेते थे। ऐसी शकल बनाए रखते थे कि आपको कहीं गांव देहात के मेले मे मिल जाए तो आप उन्हें पहचान न पाएं। वो गरीबों के सुख दुःख का हिस्सा बने रहते थे। उनके यहाँ बच्चा पैदा होने पर मिठाई और उनके मर जाने पर तेरहवीं की पूड़ी खाना याद रखते थे। गरीब अपना शुभचिंतक मानता था उन्हें ,उनका आभारी बना रहता था। वो विनम्रता ओढ़ते बिछाते थे। जानते थे कि विनम्रता ही है जो उन्हें और अमीर बना सकती है और जमाने की बुरी नजर से भी बचा सकती है।

विनम्र होना मुश्किल होता है वैसे पर हमें भरसक विनम्र दिखने की कोशिश करना चाहिए। विनम्र कैसे दिखे अब। सादे कपड़े पहने। सादा दिखें। कोई मिले तो उसे वक्त दे। अपनी कम कहें। सामने वाले की ज्यादा सुने। सामने वाले की बातों से उसकी कमज़ोरी पकड़ ले और उसे प्यार से पटकनी दे दे। पटकने के बाद सहलाएं ताकि वो आपका आभारी बना रहे। और हर तरफ आपकी तारीफ़ें करता फिरे।

गणेश जी की यह उक्ति आज भी कारगर है। आज भी वो अमीर जो सादा दिखने में भरोसा करते है ,अपनी शर्ट इन नहीं करते,चप्पलें पहनकर बाजार चले जाते हैं और अमीर होते जाते है। विनम्रता वो चीज़ है जिसे दिखा कर आप दूसरे के लड्डुओं पर काबिज हो सकते है। विनम्र होना क़तई जरूरी नहीं, विनम्र होकर दिखना पर्याप्त है। विनम्र आदमी से मिलकर सामने वाला असावधान हो जाता है और आप जीत जाते है। यह गणेश जी की सीख है अमीरों के लिए। इस पर हर अमीर को अमल करना चाहिए और गणेश जी का आभारी होना चाहिए।

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

सांस लेती और धड़कती है... छत!

छत सिर्फ घर का ऊपरी हिस्सा नहीं, सांस और धड़कन भी है। गांवों की गलियां संकरी, मिट्टी-खपरैल से बने घर होते थे, तब खुला आंगन था, जहां हर मौसम, त्यौहार और भाव पूरे रंग के साथ उतरता था। नानी के गांव में नीम तले खटिया पर सोने का दिव्य सुख था। उस छत पर धूप आती थी तो बिस्तर खिसका कर फिर सो जाते थे।

गरमी की रातें और छतों का रिश्ता हर उस इंसान को याद होगा, जो उस दौर में पैदा हुआ है। जब सूरज डूबता और तपन से थोड़ी राहत पाती, तब बिस्तर और कभी-कभी चारपाइयां लेकर छत पर जाते। हवा की मादक ठंडक में दादी-नानी की कहानियां सुनते और तारों को गिनते-गिनते नींद की गोद में चले जाते। वह नींद, मानो पूरा ब्रह्मांड सिरहाने खड़ा हो!

छत सिर्फ आराम की जगह नहीं थी। किसी छत पर मक्की के भुट्टे और गेहूं की बालियां सूख रही होतीं, किसी पर अचार और पापड़ धूप ले रहे होते। गांव की औरतें वहीं बैठकर बुनाई-कढ़ाई करतीं और हंसी-मजाक में रोज का बोझ हलका करतीं।

संक्रांति पर तो मानो हर छत पतंगों का मैदान बन जाती। 'वो काटा' की आवाज से आसमान हिल जाते थे! दीवाली की रात, दीये से सजी छतें, आकाश में जैसे धरती की लौ बिखेर देतीं। होली पर छतों से रंग और अबीर पड़ोस तक छलक जाते। प्रेम और संवाद की भी गवाह थी छत। कई कहानियां छतों से शुरू होकर गलियों तक गईं। कभी चांदनी में धीमे से फुसफुसाते शब्द, तो कभी आंखों का मौन संवाद... छतें न जाने कितनी भावनाओं की गवाह रही हैं। वक्त के साथ गांव भी बदल गए। कच्चे की जगह पक्के मकान हो गए। बहुमंजिला इमारतों ने छतों का मतलब बदल दिया। अब छतों पर न तो बच्चे खेलते हैं, न तारे गिनते हैं। वहां पानी की टंकियां, एयरकंडीशनर की मशीनें और सोलर पैनल हैं। छत पर बैठने का समय नहीं रहा। जहां कभी चांदनी रातों में गप्पबाजी होती थी, अब वहां मोबाइल की दुनिया है। शहरों में छतों ने नया रूप धर लिया है– रूफटॉप रेस्तरां और कैफे। खुले आसमान के नीचे खाने-पीने और बातचीत का आनंद लेते हैं। चमचमाती

रौशनी, मद्धम संगीत, आधुनिक सजावट और ऊंचाई से जगमगाता शहर।

आज छतों पर रेस्तरां सिर्फ भोजनालय नहीं, बल्कि अनुभव हैं। यहां तस्वीरें खींचते हैं, दोस्तों के साथ समय बिताते हैं और भीड़भाड़ से कुछ पल अलग महसूस करते हैं। यह आज जीवनशैली की नई पहचान है, पर फर्क है। गांवों की छतें परिवार और समुदाय को जोड़ती थीं, वहीं आज बाजार और उपभोग का जरिया बन चुकी हैं। पहले छत पर चांदनी मुफ्त थी, रिश्ते सहज थे, आज रोशनी नकली है और अनुभव खरीदे जाते हैं। छत कभी 'हम' थी, आज छत 'मैं' है, जहां आनंद और उपभोग को अहमियत देते हैं।

यदि हम चाहें तो छतों को फिर से जीवंत बना सकते हैं। आधुनिक छतों पर छोटे-छोटे बगीचे, खुली जगह और पारिवारिक बैठकी लौटा सकते हैं। छतें हमें नेचर के पास ला सकती हैं और परिवार को फिर से एक धागे में पिरो सकती हैं। गांवों की छतें केवल घर की नहीं थीं, जीवन का वह आंगन थीं, जहां रिश्ते और यादें फलती-फूलती थीं।

छत हमें याद दिलाती हैं कि जीवन केवल उपभोग नहीं, साझा अनुभव भी है। यदि हम आधुनिकता और परंपरा को मिलाकर चलें तो छतें फिर से हमारी धड़कन बन सकती हैं। छतें हमारे जीवन का वह हिस्सा हैं, जहां परिवार ने हंसी बांटी, बच्चे खेले, कहानियां सुनाईं और रिश्ते मजबूत किए। यदि आधुनिकता से जोड़ लें तो छतें फिर से जीवन की धड़कन बन सकती हैं।